cmyk

वर्ष : 18 अंक: 110 | ग्वालियर

गुरुवार 22 मई 2025

पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रु.

दैनिक

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़ से प्रकाशित

चम्बल सुर्खी

उत्कृष्ट एवं सफल प्रकाशन के 37 वर्ष

निष्पक्ष एवं निर्भीक विचारों का प्रवक्ता

आज का तापमान
अधिकतम 42 डिग्री
न्यूनतम 30 डिग्री

BJP आईटी सेल प्रमुख और अर्नब गोस्वामी पर FIR: झूठी जानकारी फैलाने का आरोप

तुर्किये के इस्तांबुल कांग्रेस सेंटर को कांग्रेस ऑफिस बताया था

बेंगलुरु भाजपा आईटी सेल प्रमुख अमित मालवीय और रिपब्लिक टीवी के जर्नलिस्ट अर्नब गोस्वामी के खिलाफ कांग्रेस ने स्न्ढक्र की है। दोनों पर कांग्रेस पार्टी के खिलाफ झूठी और भ्रामक जानकारी फैलाने का आरोप है। अमित मालवीय ने 17 मई को 'X' पर अर्नब गोस्वामी एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वो बता रहे हैं कि कांग्रेस पार्टी का तुर्किये में रजिस्टर्ड ऑफिस है। मालवीय ने लिखा- राहुल गांधी को बताना चाहिए कि ऐसा करने की जरूरत क्यों पड़ी। यह हैरान और समझ से बाहर का मामला है। देश को इसका सच जानने का हक है। इसी वीडियो को लेकर शिकायत में कहा गया है कि ऐसा सोची-समझी रणनीति के तहत देश की जनता को गुमराह और कांग्रेस पार्टी को बदनाम करने के लिए किया गया है। यह लोगों की भावनाओं को भड़काने, देश की सुरक्षा और लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश है।

ED बोली- सोनिया-राहुल के खिलाफ केस बनता है:अपराध की आय से 142 करोड़ कमाए

नेशनल हेराल्ड केस की अगली सुनवाई जुलाई में

नई दिल्ली

कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और राहुल गांधी से जुड़े नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आज दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट में चौथी सुनवाई हुई। श्वष्ठ ने कोर्ट को बताया कि, पहली नजर में सोनिया और राहुल के खिलाफ केस बनता है। दोनों ने अपराध की आय से 142 करोड़ रुपए कमाए हैं। ED की तरफ से पेश एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने कहा कि आरोपी तब तक अपराध की आय का आनंद ले रहे थे जब तक कि प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने नवंबर 2023 में नेशनल हेराल्ड से जुड़ी 751.9 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त नहीं कर ली। ED की तरफ से दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने कहा कि, इस मामले में 2 से 8 जुलाई तक रोजाना सुनवाई होगी। नेशनल हेराल्ड केस 2012 से चल रहा है, जब भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने सोनिया, राहुल और उनकी सहयोगी कंपनियों से जुड़े लोगों के खिलाफ शिकायत की थी।

हरियाणा CM ने पीएम मोदी से की मुलाकात ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की बधाई दी

सैनी बोले-जांबाज सैनिकों ने आतंकियों को मिट्टी में मिलाया

चंडीगढ़ ,ए.।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार भेंट कर ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की बधाई दी और सेना का आभार जताया। इसके उपरांत सीएम सैनी ने हरियाणा भवन नई दिल्ली में पत्रकारों को संबोधित किया। नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश के जांबाज सैनिकों ने आतंकी ठिकानों को उनकी सर जमीन पर ही मिट्टी में मिलने का काम किया है। ऐसा ऐतिहासिक निर्णय प्रधानमंत्री ही ले सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहलगाम में आतंकवादियों ने कायराना हरकत कर निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारा। इस घटना से देश के लोग आहत थे और उनमें रोष था। देश के नागरिक आतंकवाद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई चाहते थे। प्रधानमंत्री मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ कड़े कदम उठाते हुए ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया और हमारे सैनिकों ने आतंकियों को उन्हीं की सर जमीन पर जाकर धूल में मिलाने का काम किया।

2014 से पहले देश में घुसकर हमला करते थे

आतंकी नायब सिंह सैनी ने कहा कि वर्ष 2014 से पहले आतंकवादी देश में घुसकर घटनाओं को अंजाम देते थे। पूरे देश में भय का माहौल था कोई भी सुरक्षित नहीं था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ सख्त कदम उठाने का काम किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब समय आ गया है आतंकवाद की बची हुई जमीन को मिट्टी में मिलाने का। जहां से आतंकवादी जन्म लेते थे और पाक उन्हें संरक्षण देता था, उसी पाक की भूमि पर जाकर हमारे सैनिकों ने आतंकियों को मिट्टी में मिलाने का काम किया है।

सैनी बोले- देश में संतुष्टि का भाव

सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश सुरक्षित है। प्रधानमंत्री ने ऐसी कार्रवाई करके देश को मजबूत, सुरक्षित और सशक्त बनाने की दिशा में काम किया है। अब देश में संतुष्टि का भाव है और आतंकियों में भय का माहौल बना है। एक सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर से पाक का असली चेहरा पूरे विश्व के सामने आ गया है। पाकिस्तान भारत को बदनाम कर रहा था और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाक का आतंकी चेहरा पूरी दुनिया के सामने लाकर खड़ा कर दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते।

पीएम के दौरे से हरियाणा को ऊर्जा मिलती है

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री को हरियाणा में चल रही विकास योजनाओं के बारे में भी अवगत करवाया गया है। प्रधानमंत्री ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती पर कई विकास परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाने का काम किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब-जब प्रधानमंत्री का हरियाणा का दौरा होता है तो जनता को नई ऊर्जा और स्फूर्ति मिलती है।

पौधरोपण महाभियान-2025

नदियों के किनारे लगाए जाएंगे 4.12 करोड़ पौधे

13 प्रमुख नदियों के पांच किमी. एरिया में पौधरोपण कराएगी योगी सरकार

24271.66 हेक्टेयर एरिया में होगा पौधरोपण

यमुना किनारे 6712.44 हेक्टेयर में एक करोड़ 9 लाख तथा गंगा तीरे 4356.13 हेक्टेयर में लगाए जाएंगे 77 लाख से अधिक पौधे

बेतवा किनारे 53 लाख, सई नदी किनारे 34.25 लाख, गोमती किनारे 33.56 लाख, केन किनारे लगाए जाएंगे 12.22 लाख पौधे, हिंडन को संवारने के लिए लगाए जाएंगे 4.29 लाख पौधे

चंबल, छोटी गंडक, हिंडन, रामगंगा, राप्ती, सई, सरयू, सोन आदि नदियों के किनारे भी किए जाएंगे वृहद पौधरोपण

लखनऊ,ए.।

योगी सरकार पौधरोपण महाभियान-2025 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश की नदियों के पांच किमी. दायरे में 4.12 करोड़ पौधे लगाएगी। यूपी की हरियाली बढ़ाने के लिए सरकार ने यह कदम भी बढ़ाया है। विगत वर्ष-2024 में नदियों के किनारे 2656 स्थलों पर 3.72 करोड़ पौधरोपण किए गए थे। यूपी से होकर गुजरने वाली 13 प्रमुख नदियों के समीप 24271.66 हेक्टेयर एरिया में पौधरोपण होगा। इन नदियों में गंगा, यमुना, सरयू, राप्ती, चंबल, छोटी गंडक, हिंडन, गोमती आदि प्रमुख हैं। वहीं सर्वाधिक पौधरोपण यमुना नदी वाले जनपदों में होंगे।

पौधरोपण महाभियान-2025 में सरकार का लक्ष्य

नदी	एरिया (हेक्टेयर में)	पौधे
बेतवा	3708.15	5309321
चंबल	100.00	160000
छोटी गंडक	533.50	853600
गंगा	4356.13	7704801
गोमती	1557.20	3356120
हिंडन	218.99	429014
केन	781.06	1233964
रामगंगा	589.19	982244
राप्ती	1216.15	1945760
सई	1449.40	3425021
सरयू	2341.02	3935660
सोन	708.42	950962
यमुना	6712.44	10988763
कुल	24271.66	4,12,75,230

यमुना के समीप लगाए जाएंगे सर्वाधिक पौधे

पौधरोपण महाभियान-2025 के मिशन निदेशक दीपक कुमार ने बताया कि सर्वाधिक पौधे यमुना नदीं के किनारे लगाए जाएंगे। यमुना किनारे एक करोड़ 9 लाख से अधिक पौधे लगेंगे। गंगा नदी के किनारे वाले जनपदों में 77 लाख पौधरोपण किए जाएंगे। बेतवा किनारे 53 लाख, सरयू किनारे 39.35 लाख पौधे, सई किनारे 34.25 लाख, गोमती किनारे 33.56 लाख किनारे पौधे लगाकर संवारे जाएंगे।

त्रिवेणी वन भी बसाएगी योगी सरकार

योगी सरकार 2025 में आयोजित महाकुम्भ की स्मृति में नदी किनारे नीम, पीपल, पाकड़ के पौधों का त्रिवेणी रोपण भी कराएगी। पौधरोपण महाभियान-2025 के मिशन निदेशक दीपक कुमार ने बताया कि नदियों के पांच किमी. एरिया में भी पौधरोपण कराया जाएगा। इसके लिए गंगा, यमुना, राप्ती, सरयू, सोन, चंबल समेत 13 नदियों के आसपास के एरिया को चिह्नित किया जा रहा है।

वक्फ कानून पर सुप्रीम कोर्ट में लगातार दूसरे दिन सुनवाई: केंद्र बोला- वक्फ का इस्लाम में जिक्र, लेकिन इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा नहीं

नई दिल्ली,ए.।

वक्फ (संशोधन) कानून की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को लगातार दूसरे दिन सुनवाई हुई। केंद्र की तरफ से सॉलिसिटर जनरल (SG) तुषार मेहता ने कोर्ट से कहा कि सरकारी जमीन पर किसी का कोई हक नहीं हो सकता, चाहे वो वक्फ बाय यूजर के आधार पर ही क्यों न हो। स्त्र मेहता के मुताबिक अगर कोई जमीन सरकारी है तो सरकार को पूरा अधिकार है कि वह उसे वापस ले ले, भले ही उसे वक्फ घोषित कर दिया गया हो। किसी भी प्रभावित पक्ष ने अदालत का दरवाजा नहीं खटखटाया। किसी ने भी ये नहीं कहा कि संसद के पास इस कानून को पारित करने का अधिकार नहीं है।

ज्योति ISI एजेंट से बोली- पाकिस्तान में शादी करवा दो: पाकिस्तानी हैंडलर के साथ चैट मिली; पठानकोट आर्मी बेस की रेकी करने का भी शक

हिसार/चंडीगढ़ ,ए.।

पाकिस्तान के लिए जासूसी के शक में पकड़ी गई हिसार की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा की पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के अधिकारी से एक और वॉट्सएप चैट सामने आई है। इसमें ISI एजेंट हसन अली उसे दुआ दे रहा है, तो जवाब में ज्योति उससे पाकिस्तान में शादी कराने को कह रही है। ज्योति एक साल पहले पठानकोट गई थी। उसने वहां कोई वीडियो रिलीज नहीं किया था, लेकिन फेसबुक पर शेयर की गई फोटो और एक छोटी सी क्लिप से उसके वहां जाने का खुलासा हो गया। जिसके बाद राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) और इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) की टीम उसे मंगलवार (20 मई) को पठानकोट लेकर गई।

राजीव गांधी की पुण्यतिथि, राहुल-मोदी-खड़गे ने श्रद्धांजलि दी

राहुल ने बचपन की फोटो शेयर की, कहा- आपकी यादें मेरा मार्गदर्शन करती हैं

नई दिल्ली

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की आज 34वीं पुण्यतिथि है। इस मौके पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे दिल्ली के वीर भूमि पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि दी। राहुल गांधी ने X पर पापा राजीव गांधी के साथ बचपन की फोटो शेयर की। लिखा- पापा, आपकी यादें हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन करती हैं। आपके अधूरे सपनों को साकार करना ही मेरा संकल्प है और मैं इन्हें पूरा करके रहूंगा। PM मोदी ने कहा- मैं हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मल्लिकार्जुन खड़गे ने 'X' पर लिखा- राजीव गांधी जी भारत के एक महान सपूत थे, जिन्होंने करोड़ों भारतीयों में नई उम्मीद जगाई।

राजीव गांधी को नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

मल्लिकार्जुन खड़गे- राजीव गांधी की दूरदर्शी सोच और साहसी फैसलों ने भारत को 21वीं सदी की चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार किया। उनके अहम कामों में 18 साल की उम्र में वोट देने का अधिकार देना, पंचायती राज को मज़बूत करना, टेलिकॉम और IT क्रांति की शुरुआत करना, कंप्यूटराइजेशन को बढ़ावा देना, शांति समझौते करवाना, टीकाकरण प्रोग्राम शुरू करना और सबको साथ लेकर चलने वाली नई शिक्षा नीति लाना शामिल हैं। ममता बनर्जी- भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धा से याद करती हूं। राजीव जी एक दूरदर्शी नेता और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले सच्चे शहीद थे।

गोवा में भारी बारिश, रेड अलर्ट

नई दिल्ली/ बेंगलुरु/ मुंबई/ तिरुवनंतपुरम/ रांची दिल्ली,

मध्य प्रदेश समेत देश के 30 राज्यों के कुछ इलाकों में आज आंधी-बारिश हो रही है। इनमें हरियाणा, असम, मेघालय, गोवा और कर्नाटक के समुद्री इलाकों में तेज बारिश हो रही है। गोवा में लगातार दूसरे दिन भारी बारिश जारी है। साथ ही 60 kmph की रफ्तार से हवा चल रही है। बीते 24 घंटों में उत्तर गोवा के पेरनेम में 207 द्वद्व से ज्यादा बारिश दर्ज हुई है। मौसम विभाग (IMD) ने दोनों जिलों उत्तर और दक्षिण गोवा में आज ऑरेंज अलर्ट जारी किया था, फिर दोपहर में इसे बढ़ाकर रेड अलर्ट में बदल दिया गया। राज्य सरकार ने वाटरफॉल, जंगल और ट्रैकिंग स्पॉट पर एंट्री बैन कर दी है।

जल्द पूर्ण किये जाएं सिंहस्थ 2028 से संबंधित अधोसंरचना के सभी कार्य- मुख्यमंत्री

सिंहस्थ से संबंधित विभागों में तकनीकी अधिकारी-कर्मचारियों की कमी को दूर किया जाए

श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन के लिए रेलवे से आवश्यक समन्वय जरूरी

भोपाल,ब्यूरो

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सिंहस्थ 2028 से संबंधित सभी अधोसंरचना के कार्यों को जल्द पूर्ण करना आवश्यक है। प्रत्येक कार्य की समय सीमा निर्धारित कर, गतिविधियां संचालित की जाएं। कार्यालीन प्रक्रियाओं को वर्षाकाल तक पूर्ण करना सुनिश्चित करें, जिसमें वर्षाकाल के तुरंत बाद निर्माण प्रक्रिया तत्काल आरंभ की जा सकें। नगर निगम उज्जैन, विकास प्राधिकरण सहित अन्य निर्माण ऐजेंसियों में यदि तकनीकी अधिकारी-कर्मचारियों की कमी है तो अन्य विभागों से प्रतिनियुक्ति पर लेकर यह कमी दूर की जाए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं का रेल से बड़ी संख्या में आवागमन होगा और महाकालेश्वर सहित ओंकारेश्वर तथा मंदसौर स्थित पशुपतिनाथ मंदिर भी श्रद्धालुओं के आवागमन के मुख्य केंद्र रहेंगे। अत: सड़क मार्गों के साथ-साथ रेलवे से बेहतर समन्वय सुनिश्चित करना आवश्यक है। इससे क्षेत्र में रेल यातायात को सुगम तथा श्रद्धालुओं की यात्रा को सुविधाजनक बनाने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सिंहस्थ 2028 की मंत्रि- मण्डलीय समिति की तीसरी बैठक को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रालय में हुई इस बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, श्री राजेंद्र शुक्ल, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह, परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, खाद्य नागरिका आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंहस्थ 2028 में स्नान व पेयजल, सीवरेज, आवागमन, श्रद्धालुओं के आवास, कानून व्यवस्था, आवश्यक चिकित्सा सुविधा आदि के लिए की जारी व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए जल संसाधन विभाग, लोक निर्माण, पर्यटन, नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों और उनकी प्रगति की जानकारी प्राप्त की। बैठक में कान्ह नदी डायवर्जन, 30 किमी घाट निर्माण, क्षिप्रा नदी में निरंतर जल प्रवाह के लिए सिलार खेड़ी सेवर खेड़ी बांध, क्षिप्रा व कान्ह नदी पर बैराजों के निर्माण की स्थिति की जानकारी प्रस्तुत की गई।

भारत ने पाकिस्तान हाईकमीशन के अफसर को निकाला

24 घंटे में देश छोड़ने को कहा; ऑपरेशन सिंदूर में महिला सैनिकों ने भी मोर्चा संभाला था

नई दिल्ली/श्रीनगर,ए.।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मंच से भारतीय राजनयिक अनुपमा सिंह ने कहा कि पाकिस्तान आज भी जिहादी आतंकवाद का केंद्र बना है। पाकिस्तान आतंकवाद को जन्म देता है और पालता है। वह खुद को आतंकवाद से पीड़ित के रूप में दिखावा नहीं कर सकता। आतंकी हमलों के प्रायोजक और आयोजक सीधे पाकिस्तान की धरती से काम करते हैं। पाकिस्तान WHO जैसे वैश्विक मंचों का इस्तेमाल झूठ और विक्टिम कार्ड खेलने के लिए करता है। इससे पहले, BSF के DIG एस.एस. मंड ने न्यूज एजेंसी ANI को बताया कि जम्मू-कश्मीर के सांबा सेक्टर में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान महिला जवानों ने भी पाकिस्तान के खिलाफ मोर्चा संभाला था। उन्होंने बताया- 8 मई की रात क्चस्न ने पाकिस्तान से आ रहे 45-50 आतंकियों को भारत में घुसने से रोका। BSF के जवान पहले से अलर्ट थे।

आंगनबाडी भवनों का निर्माण शीघ्रता से पूर्ण करें-डीएम

सहायक यंत्री एवं जिला समन्वयक स्वच्छता को नोटिस जारी करने के निर्देश

श्योपुर

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने कहा है कि पीएम जनमन योजना, राज्य आयोजना मद, पीवीटीजी एवं पीएम आदर्श ग्राम योजना अंतर्गत स्वीकृत आंगनबाडी भवनों के निर्माण कार्य शीघ्रता से पूर्ण किये जायें। इसके साथ ही आवश्यकतानुसार आंगनबाडी भवनो के निर्माण का प्रस्ताव भेजा जायें। वे आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित महिला बाल विकास विभाग की बैठक में आंगनबाडी भवनो के निर्माण कार्यो की समीक्षा के दौरान अधिकारियों को निर्देशित कर रहे थे। बैठक के दौरान उन्होने अनुपस्थित आरईएस के सहायक यंत्री विजयपुर श्री सतीश कैराना तथा शौचालय निर्माण के संबंध में लंबित कार्य पूर्णता प्रमाण पत्र के लिए जिला समन्वयक समग्र स्वच्छता श्री जीएस डोगरे को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश भी दिये।

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने निर्देश दिये कि विकासखण्ड श्योपुर अंतर्गत पीएम जनमन में स्वीकृत 17 आंगनबाडी केन्द्रो में से 16 के कार्य पूर्ण हो गये है, शेष एक कार्य को 15 दिन में पूर्ण किया जायें। इसी प्रकार नगरपालिका श्योपुर क्षेत्र में पीएम जनमन के तहत स्वीकृत एक आंगनबाडी का कार्य तथा राज्य आयोजना मद में बडौदा नगरीय क्षेत्र में लंबित दो आंगनबाडी केन्द्रो के निर्माण शीघ्रता से पूर्ण कराये जायें। कराहल में पीएम जनमन योजना के तहत 9 एवं राज्य आयोजना मद में स्वीकृत 4 कुल 13 भवनों को निर्माण में तीन कार्य पूर्ण हो गये है, 4 भवनों का निर्माण 15 जून तक पूर्ण होगा। इस संबंध में निर्देश दिये कि शेष प्रगतिरत कार्य जून अंत तक पूर्ण किये जायें। कराहल क्षेत्र में पीवीटीजी अंतर्गत स्वीकृत 10 आंगनबाडी केन्द्रों में से 8 का निर्माण पूर्ण हो गया है, निर्देश दिये गये कि निर्माण एजेंसी पीआईयू शेष दो कार्यो को जल्द से जल्द पूरा कराये।

सहायक संचालक महिला बाल विकास श्री रिशु सुमन ने जानकारी दी कि जिले में पीएम जनमन योजना के तहत 37, राज्य आयोजना मद में 110, पीवीटीजी में 10 तथा पीएम आदर्श ग्राम योजना में 05 आंगनबाडी केन्द्र स्वीकृत है। उन्होने बताय कि पीएम जनमन योजना अंतर्गत संचालित 24 मल्टीपरपज सेंटर में से 23 का कार्य शुरू हो गया है। निर्देश दिये गये कि निर्माण कार्य गुणवत्ता के साथ समयावधि में पूर्ण कराये जायें। श्री सुमन ने बैठक के दौरान जानकारी दी कि महिला बाल विकास विभाग द्वारा 206 शौचालयों के निर्माण की राशि जिला पंचायत को प्रदाय की गई है, जिसका कार्य उपयोगिता प्रमाण पत्र उपलब्ध नही कराया गया है, इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा द्वारा समग्र स्वच्छता अभियान के जिला समन्वयक श्री डोगरे को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये गये।

आवदा में लगा शिविर, 83 बच्चों की स्क्रीनिंग, 13 चिन्हित

श्योपुर

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के निर्देशानुसार जन्मजात बच्चों की विकृतियों के निशुल्क उपचार हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत आज आंगनबाडी केन्द्र आवदा में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें आरबीएसके चिकित्सको द्वारा 83 बच्चों की स्क्रीनिंग की गई तथा 13 बच्चें उपचार लिए चिन्हित किये गये। स्वास्थ्य शिविर में डॉ. सीपी शर्मा, डॉ. शबीना खान, डॉ. गिर्राज जांगिड, आरबीएसके सलाहकार श्रीमती स्नेहलता गुर्जर, एमपीएस श्री राजेन्द्र सिंह कंषाना, आंगनबाडी सुपरवाईजर श्रीमती प्रेमलता मेहरा, सीएचओ श्री विनोद कुमार चंदेल सहित आशा, आंगनबाडी कार्यकर्ता आदि उपस्थित थे।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिलीप सिंह सिकरवार ने बताया कि आदिवासी विकासखण्ड कराहल के ग्राम आवदा केंप में आरबीएसके चिकित्सीय टीम ने 83 बच्चों का पंजीयन कर स्क्रीनिंग व जांच की गई जांच दौरान 13 चिन्हित किए गए जिसमें न्यूरो मोटोर डिले के 02, हर्निया का 01, हार्ट के 02 सहित अन्य बीमारियों के बच्चें शामिल है। आरबीएसके प्रभारी श्रीमती स्नेहलता गुर्जर ने बताया कि परीक्षण के दौरान चिन्हित बच्चों का उपचार जिला चिकित्सालय सहित आवश्यकतानुसार बाहर के सुपर स्पेशलिटी अस्पतालो में निशुल्क रूप से कराया जायेगा।

पॉलीटेक्निक कॉलेज श्योपुर में प्रवेश की अंतिम तिथि 01 जून

श्योपुर।

शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय श्योपुर में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू हो गई है, प्रवेश लेने की अंतिम तिथि 01 जून निर्धारित है। प्राचार्य महाविद्यालय ने बताया कि वर्तमान में महाविद्यालय की तीन ब्रांच सिविल इंजीनियरिंग, कम्प्युटर साइंस इंजीनियरिंग एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग संचालित है। इच्छुक विद्यार्थी इन ब्रांचो में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते है। प्रवेश के लिए http://dte.mponline.gov.in पर जाकर अपना रजिस्टेऊशन कर सकते है। इसके अलावा विद्यार्थी मोबाइल नंबर 8560962460, 9878129644, 7024945143 एवं 7999126180 पर प्रवेश के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते है।

युवा संगम का आयोजन 30 को

विभिन्न कंपनियो में उपलब्ध होंगे रोजगार के अवसर

श्योपुर

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में शिक्षित बेरोजगार युवक एवं युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला रोजगार कार्यालय, शासकीय आईटीआई तथा जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में युवा संगम का आयोजन किया जा रहा है। युवा संगम का आयोजन निषादराज भवन जिला पंचायत परिसर श्योपुर में 30 मई को प्रात: 11 बजे से अपरान्ह 3 बजे तक होगा।

जिला रोजगार अधिकारी श्री आशीष कुमार जैन ने बताया कि युवा संगम के माध्यम से युवाओं को विभिन्न कंपनियो में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेगे। इस दौरान सैल्समैन, ऑफिस वर्कर, बीमा मार्केटिंग क्षेत्र, ऑटो मोबाइल सेक्टर, एलआईसी अभिकर्ता, सिक्योरिटी गार्ड, सिक्योरिटी सुपरवाईजर, कम्प्युटर, ऑपरेटर, आदि के 2500 पदों पर भर्ती की जायेगी। इच्छुक आवेदक जिनकी योग्यता 5वी से लेकर पोस्ट ग्रेजुएशन तक है, आयु सीमा 18 से 35 वर्ष तक निर्धारित है। इस अवसर पर ऐसे अभ्यर्थी जो स्वयं का रोजगार स्थापित करना चाहते है, उन्हें विभिन्न स्वरोजगार मूलक विभागों द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जायेगा तथा शासन की ओर से दी जाने वाली सहायता एवं योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की जायेगी।

कलेक्टर ने तहसीलदार न्यायालय शाढौरा का किया निरीक्षण

अशोक नगर

कलेक्टर श्री आदित्य सिंह ने बुधवार को तहसील शाढौरा के निरीक्षण के दौरान उन्होंने तहसीलदार न्यायालय शाढौरा में लंबित राजस्व प्रकरणों को देखा। इस दौरान तहसीलदार को निर्देशित किया कि अनावश्यक रूप से कोई भी प्रकरण न्यायालय में लंबित न रहे यह सुनिश्चित किया जाए। साथ ही निर्देशित किया कि आमजन से संबंधित राजस्व प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण करें। जिससे उन्हें समय पर लाभ मिले सके। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अभिलेख दुरूस्तीकरण, नामातरण, सीमांकन के प्रकरणो को अवलोकन किया ।उन्होंने निर्देशित किया तहसीलपरिसर में आने वाले आगन्तुकों को छाया एवं बैठने की व्यवस्था हेतु टीन सेट की कराये जाने के निर्देश दिये। साथ ही उन्होंने लोकसेवा केन्द्र शाढौरा का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं को देखा।

कलेक्टर ने किया ग्राम पंचायत दियाधरी एवं सिजावट का निरीक्षण

अशोक नगर

कलेक्टर श्री आदित्य सिंह ने बुधवार को भ्रमण के दौरान जनपद पंचायत अशोकनगर की ग्राम पंचायत दियाधरी एवं सिजावट का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत भवन दियाधरी एवं सिजावट बंद मिला। साथ ही ग्राम पंचायत भवन सिजावट की कई वर्षो से साफ-सफाई नही की गई। साथ ही पंचायत भवन में किसी भी प्रकार का रिकार्ड संधारित नही मिला । पंचायत भवन में स्कूली पुस्तकें अनावश्यक रूप से पाई गई। इस दौरान उन्होंने ग्राम पंचायत सिजावट के सरपंच नीरज प्रजापति के विरूद्ध पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 40 के तहत कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिए गए। साथ ही सचिव मुंशीलाल यादव एवं रोजगार सहायक केदार मिश्रा के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिए। इसी प्रकार ग्राम पंचायत भवन दियाधरी बंद पाये जाने पर दियाधरी के सरपंच रेखाबाई,सचिव शिवकुमार रघुवंशी एवं रोजगार सहायक श्रीमती रचना अहिरवार के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया।

चौंडपुर तालाब पर श्रमदान कार्यक्रम आयोजित जल संरक्षण के लिए ग्रामीणों को किया जागरूक

श्योपुर

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अतेन्द्र सिंह गुर्जर के निर्देशन में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जल संरक्षण के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

जन अभियान परिषद की नवांकुर योजना अंतर्गत चयनित संस्थाएं एवं ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति व मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं तथा परामर्शदाताओं के साथ-साथ परिषद के अमले के द्वारा विभिन्न गतिविधियों से जल संरक्षण एवं जल की महत्ता के प्रति जन जागरूकता लाई जा रही है।

इसी तारतम्य में मठेपुरा पंचायत के चौड़पुर ग्राम में संभागीय समन्वयक श्री धर्मेंद्र सिंह सिसोदिया एवं जिला समन्वयक श्रीमती नेहा सिंह के नेतृत्व नवांकुर संस्था ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति मठेपुरा तथा मातेश्वरी सेवा संस्था के सहयोग से श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा तालाब की पाल पर पूर्व से संचालित पत्थर से पिचिंग कार्य में श्रमदान कर सहयोग किया गया। इसके उपरांत मठेपुरा ग्राम में जल गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में सरपंच श्री कमलेश बैरागी, रोजगार सहायक श्री रामसिंह, श्री सुरेंद्र बैरागी, श्री रामकेश आदिवासी, श्री हरिशंकर मीणा, श्री रामभरत, समिति अध्यक्ष श्री अविनाश माहौर, श्री मनोज शर्मा, श्री विराट माहौर, श्री जीतेन्द्र कुमार माहौर, श्री कपिल मीणा, श्री रामरूप मीणा एवं अन्य ग्रामवासी उपस्थित रहे।

नगर परिषद कार्यालय शाढौरा का किया निरीक्षण

अशोक नगर

कलेक्टर श्री आदित्य सिंह ने बुधवार को तहसील शाढौरा क्षेत्र के भ्रमण के दौरान नगर परिषद शाढौरा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सब इंजीनियर से शहर की साफ सफाई,पेयजल व्यवस्था, पीएम आवास,संबल योजना के अंतर्गत हितग्राहियों को दिये जाने वाले लाभ के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने सफाई दरोगा को निर्देशित किया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में प्रात:07 बजे साफ सफाई कराना सुनिश्चित करें। जिससे इलाज हेतु मरीजों को स्वास्थ्य केन्द्र में बेहतर साफ सफाई मिल सके। इस दौरान उन्होंने नगरपालिका अध्यक्ष से क्षेत्र की समस्याओं के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने शहर के तीन मुख्य मार्ग के चौडीकरण एवं पुलियों के निर्माण कार्य में संबंधित एजेंसी द्वारा शीघ्र कार्य कराये जाने की बात कही। इस पर कलेक्टर ने सब इंजीनियर को आवश्यक कार्यवाही कर निर्माण कार्य कराये जाने के निर्देश दिये। शहर में पेयजल की सप्लाई एक दिन छोडकर की जा रही है।

इस संबंध में कलेक्टर ने विशेष जानकारी लेकर पानी की सप्लाई हेतु निर्देशित किया।

सफलता की कहानी 'युवा संगम बना रोजगार का संगम: बेरोजगार युवाओं को मिला नया जीवन, कंपनियों में कार्य प्रारम्भ'

गुना

प्रदेश शासन के मार्गदर्शन और कलेक्टरकिशोर कुमार कन्यालके नेतृत्व में हर माह चौथे बुधवार को आयोजित हो रहे युवा संगम कार्यक्रम ने जिले के सैकड़ों युवाओं के जीवन की दिशा बदल दी है। इस अभिनव पहल ने युवाओं को न केवल रोजगार दिलाया है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रेरणा दी है। जिला रोजगार अधिकारी श्री बी.एस. मीना ने बताया कि रोजगार की तलाश कर रहे युवाओं और रोजगार देने वाली कंपनियों को एक ही छत के नीचे लाना, और यह उद्देश्य न केवल सिद्ध हुआ, बल्कि कई युवाओं के लिए एक नई शुरुआत का द्वार भी बन गया। पिछले महीनों में आयोजित युवा संगम के माध्यम से चयनित कई युवा अब देश की प्रतिष्ठित कंपनियों मेंकार्य प्रारंभकर चुके हैं - जिनमें देशराज यादवनेयाज़की इंडस्ट्री, अहमदाबादमें अपनी सेवा शुरू की है। मिलन मालीअबसैमसंग, नोएडामें कार्यरत हैं और उन्होंने अपनी खुशी साझा करते हुए कहा, यह मेरे लिए सपने के सच होने जैसा है। राज कोरी, राजकुमार सेन, देवेंद्र धाकड़, सेवेन्द्र यादव, राहुल योगी, छोटू गुर्जरऔरमिथुन अहिरवारजैसे युवाओं नेचेकमेट कंपनीमें कार्यभार संभाला है।वहींएसआईएस सिक्योरिटीकंपनी में30 से 35 युवाओंने रिपोर्टिंग दी है, जिनमेंअभिषेक परिहारऔरविशाल रघुवंशीने जॉब प्राप्त कर अपनी गहरी प्रसन्नता व्यक्त की।

'नवाचार की मिसाल: कलेक्टर कन्याल ने मोबाइल कोर्ट से बदली न्याय की तस्वीर'

गुना

कलेक्टर श्री किशोर कुमार कन्याल के निर्देशन में किये गये नवाचार 'मोबाईल कोर्ट' के माध्यम से भूमि संबंधी मामलों एवं लोगों की समस्याओं का त्वरित एवं संतोषजनक निराकरण किया जा रहा है। इस अभिनव पहल के तहत हाल ही में कलेक्टर श्री कन्याल को जनसुनवाई के अन्तर्गत ग्राम कुशमौदा विकासनगर के रहवासियों द्वारा दिये गये अनावेदक राधारमण चौरसिया द्वारा कालोनीवासियों के निकलने वाले पानी को अवरूद्ध करने संबंधी आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रकरण को 'मोबाइल कोर्ट' के अंतर्गत लेते हुए तहसीलदार गुना नगर श्री जी0एस0 बैरवा को समाधान करने के निर्देश दिये गए।

निर्देशों के अनुपालन में तहसीलदार गुना नगर श्री जी0एस0 बैरवा एवं प्रभारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी गुना सुश्री मंजुषा खत्री डिप्टी कलेक्टर, पीआईओ डूडा श्री तेजसिंह यादव के द्वारा अनावेदक राधारमण चौरसिया द्वारा धारित भूखण्ड के अतिरिक्त अतिक्रमण कर बनाये गये आर.सी.सी. के निर्माणाधीन स्लैब को नगरपालिका की टीम द्वारा हटाया गया एवं कालोनीवासियों के घरो से निकलने वाले गंदे पानी के अवरोध को जे.सी.बी. की मदद से हटाकर पानी को निकालने का रास्ता बनवा कर कालोनीवासियों की समस्या का निराकरण कराया गया। अब मोहल्ले के 40 परिवारों का अवरुद्ध हुआ पानी की निकासी हो सकेगी। उक्त कार्यवाही के दौरान नगरपालिका, राजस्व एवं पुलिस अमला मौके पर मौजूद रहा।

जिला प्रशासन की इस त्वरित कार्यवाही और निष्पक्ष समाधान की कालोनीवासियों ने सराहना की एवं कलेक्टर सहित प्रशासनिक टीम के प्रति आभार प्रकट किया। 'मोबाईल कोर्ट' की यह पहल ना केवल आमजन के लिए राहतदायक सिद्ध हो रही है बल्कि लोगों को भी त्वरित निराकरण कराने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।

कन्या परिसर में रिक्त सीटो के लिए प्रवेश परीक्षा 10 जून को

कक्षा 6 में प्रवेश ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा के आधार पर मिलेगा

श्योपुर

जनजातीय कार्य विभाग अतंर्गत संचालित विशिष्ट आवासीय संस्था कन्या शिक्षा परिसर ढेगदा श्योपुर में सत्र 2025-26 के लिए कक्षा 6वी में राज्य स्तरीय ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा में प्राप्त अंको के आधार पर मिलेगा, जबकि कक्षा 7 से कक्षा 12 तक की कक्षाओं में रिक्त सीटो के लिए ऑफलाइन प्रवेश परीक्षा 10 जून को आयोजित की जायेगी।

प्राचार्य कन्या शिक्षा परिसर सुश्री कामिनी पाठक ने बताया कि विद्यालय की कक्षा 6 में रिक्त 70 सीटो के लिए प्रवेश की प्रक्रिया ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा के माध्यम से संपन्न होगी, जबकि विद्यालय की कक्षा 7 से कक्षा 12 तक की रिक्त सीटो पर प्रवेश के लिए विद्यालय द्वारा 10 जून को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जायेगी। उन्होने बताया कि कक्षा 7 एवं 8 में 5-5, कक्षा 9 में 45, कक्षा 10 में 42, कक्षा 11 में 62 तथा कक्षा 12 में 54 सीटे रिक्त है। अधिक जानकारी के लिए विद्यालय के शिक्षक श्री संजय बालोठिया मो.न. 9977205630, श्री कौशल शर्मा मो.न. 7089209620, श्री प्रभाष कुमार जैन मो.न. 9752168916 एवं श्री रविकांत कलावत मो.न. 7987464972 से संपर्क किया जा सकता है।

जिले के महाविद्यालयों व स्कूलों में सिविल डिफेंस की स्पेशल कक्षाएँ लगेंगीं - कलेक्टर

केआरजी कॉलेज में नागरिक सुरक्षा को लेकर दिया गया प्रशिक्षण

छात्राओं ने सीखीं घायलों को बचाने एवं सीपीआर देने की बारीकियाँ

केआरजी कॉलेज में कलेक्टर ने डिजिटल स्टूडियो व ओपन जिम का किया शुभारंभ

ग्वालियर / जिले के महाविद्यालयों एवं हाईस्कूल व हायर सेकेण्ड्री स्कूलों में सेल्फ डिफेंस का प्रशिक्षण दिलाने के लिये साल में दो बार विशेष कक्षायें आयोजित कराई जायेंगीं। इन कक्षाओं में एसडीआरएफ (राज्य आपदा प्रबंधन दल) व होमगार्ड के माध्यम से विद्यार्थियों को सेल्फ डिफेंस की बारीकियां सिखाई जायेंगीं। प्रथम चरण में कन्या महाविद्यालयों व स्कूलों में सेल्फ डिफेंस के प्रशिक्षण के लिये कक्षायें लगाई जायेंगीं। यह बात कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कमलाराजा कन्या स्वशासी महाविद्यालय (केआरजी कॉलेज) में नागरिक सुरक्षा को लेकर आयोजित हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम में कही।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद केआरजी कॉलेज में ऑडियो विजुअल सेंटर सह डिजिटल स्टूडियो एवं ओपन जिम का शुभारंभ भी किया। इस अवसर पर अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा प्रो. कुमार रत्नम, महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती साधना श्रीवास्तव एवं ओपन जिम की स्थापना में योगदान देने वाली कंपनी टेवा के अधिकारी श्री मनीष उज्जैनकर भी मौजूद थे। नागरिक सुरक्षा को लेकर जिला प्रशासन की पहल पर जिले के शिक्षण संस्थानों में भी एसडीआरएफ व होमगार्ड के माध्यम से सिविल डिफेंस प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार को केआरजी कॉलेज में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान छात्राओं को आपदा के समय मौके पर उपलब्ध संसाधनों से स्ट्रैचर बनाने, घायलों को सुविधाजनक तरीके से बाहर निकालने व प्राथमिक उपचार, हृदयघात से पीड़ित लोगों व बच्चों की सीपीआर पद्धति से जान बचाने का जीवंत प्रदर्शन किया। साथ ही बताया कि आप सब आपदा मित्र बनकर कैसे पीड़ित लोगों की मदद कर सकते हैं।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप सब सौभाग्यशाली हैं कि आजादी से पहले सन् 1937 में स्थापित ऐतिहासिक कॉलेज में पढ़ने का आपको मौका मिला है। उन्होंने कहा कि आप सब मन लगाकर पढ़ाई करें और माता-पिता के विश्वास पर खरा उतरकर आत्मनिर्भर बनें। साथ ही सिविल डिफेंस वॉलेन्टियर बनने के लिये भी आगे आएं। कलेक्टर ने कहा कि आप सब लक्ष्य निर्धारित कर और अनुशासित होकर मेहनत करेंगीं तो निश्चित की सफलता मिलेगी। उन्होंने कहा केआरजी कॉलेज के एल्युमिनिआई फोरम की मदद से यहाँ की छात्रायें अच्छा प्लेसमेंट प्राप्त कर सकती हैं।

तिरंगा थामकर ऑपरेशन सिंदूर के प्रति जताया सम्मान

सिविल डिफेंस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम सत्र में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान एवं जनभागीदारी समिति की अध्यक्ष श्रीमती मीना सचान के नेतृत्व में केआरजी कॉलेज की छात्राओं एवं शिक्षकों ने हाथों में तिरंगा थामकर ऑपरेशन सिंदूर के प्रति सम्मान व्यक्त किया। साथ ही देश की रक्षा का संकल्प भी लिया।

डिजिटल स्टूडियो में तैयार होगा पढ़ाने के लिये ऑडियो विजुअल मटेरियल

केआरजी कॉलेज में बनकर तैयार हुए ऑडियो विजुअल सेंटर सह डिजिटल स्टूडियो में ग्वालियर-चंबल संभाग के महाविद्यालयों में ऑडियो - विजुअल पढ़ाई के लिये विशेषज्ञ प्राध्यापकों द्वारा स्टडी मटेरियल तैयार किया जायेगा। इसके लिये इस सेंटर में अत्याधुनिक स्टूडियो बनाया गया है।

चिड़ियाघर घूमने आने वाले सैलानियों को दिलाई स्वच्छता की शपथ

ग्वालियर - स्वच्छ व स्वस्थ्य ग्वालियर के अंतर्गत शहर में म्यूज एवं डिवाइन संस्था के सहयोग से नगर निगम ग्वालियर द्वारा स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत विभिन्न मोहल्लों, विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं संस्थानों में जाकर छात्र-छात्राओं एवं आमजन को गीला सूखा कचरा अलग-अलग देने के लिए जागरूक किया जा रहा है।

आईईसी के नोडल अधिकारी श्री मुकेश बंसल ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार शहर में स्वच्छ ग्वालियर अंतर्गत नगर निगम ग्वालियर की सहयोगी संस्था डिवाईन द्वारा शहर के अनेक वार्डों में नागरिकों को 4 बीन सेग्रिगेशन के बारे में जानकारी देकर अपने घर-गली-मोहल्ले एवं सार्वजनिक स्थानो में साफ-सफाई रखने के लिए आग्रह किया गया एवं स्वच्छता की शपथ दिलाई गई और प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग ना करने के बारे में समझाइश दी गई तथा इससे होने वाले दुष्प्रभाव के बारे मे बताया गया।

इसके साथ ही स्वच्छता जागरूकता अभियान अंतर्गत म्यूज फाउंडेशन द्वारा आज विभिन्न वार्डों में नागरिको को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। उन्हें गीले एवं सूखे कचरे को अलग-अलग रखने, घर में चार डस्टबिनों की व्यवस्था करने तथा कचरा केवल निर्धारित कचरा गाड़ी में ही डालने हेतु प्रेरित किया गया तथा चिड़ियाघर पर आने वाले नागरिकों को भी स्वच्छता की समझाइश दी गई एवं तथा सिंगल यूस यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करने के लिए प्रेरित किया।

शहरी गैस वितरण नेटवर्क विकास एवं विस्तार नीति 2025 जारी

कलेक्टर ने गठित की जिला स्तरीय समिति

ग्वालियर / मध्यप्रदेश में पाइप लाइन नेटवर्क के माध्यम से घरेलू गैस की उपभोक्ताओं तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिये खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा शहरी गैस वितरण नेटवर्क विकास एवं विस्तार नीति 2025 जारी की है। उक्त नीति के अनुसार परियोजना के सुचारू क्रियान्वयन हेतु कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय निगरानी समिति गठित की गई है। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने निगरानी समिति के आदेश जारी किए हैं। इस समिति में कलेक्टर एवं डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट समिति की अध्यक्ष एवं पुलिस अधीक्षक, जिला वन अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, आयुक्त नगर निगम, महाप्रबंधक ग्राम सड़क योजना, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, जिला अधिकारी ग्राम एवं नगर निवेश, जिला परिवहन अधिकारी, क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, प्राधिकारी संस्था अवंतिका गैस लिमिटेड एवं राजस्थान गैस लिमिटेड के प्रतिनिधि, क्षेत्रीय प्रबंधक मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम सदस्य होंगे। इसके साथ ही जिला आपूर्ति नियंत्रक समिति के सचिव होंगे। जिला स्तरीय निगरानी समिति सिटी गैस वितरण, अधोसंरचना के निर्माण का विकास एवं विस्तार में आने वाली कठिनाईयों के निराकरण हेतु जिला स्तरीय समिति की बैठक माह में एक बार एवं जरूरत पड़ने पर अधिक बार बुला सकेंगे।

'जल बचाओ-जीवन बचाओ' का दिलाया संकल्प

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जन जागरण गतिविधियाँ जारी

ग्वालियर / जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल सहेजने के लिये नई संरचनाओं का निर्माण व पुरानी संरचनाओं के जीर्णोद्धार के साथ-साथ लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के प्रयास भी प्रमुखता से किए जा रहे हैं। इस काम में जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्थायें व ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियां भी सहयोग कर रही हैं। इन समितियों द्वारा बुधवार को भितरवार विकासखंड के अंतर्गत ग्राम छिरेंटा, पचौरा व दुबहा के निवासियों को जल बचाओ-जीवन बचाओ का संकल्प दिलाया गया। भितरवार विकासखंड के जन अभियान परिषद के समन्वयक श्री मनोज दुबे ने बताया कि ग्राम प्रस्फुटन एवं नवांकुर संस्थाओं द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल संरचनाओं की साफ-सफाई के साथ-साथ आम जन को जल संरक्षण व संवर्धन के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

आवश्यक सूचना

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेलयात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ग्वालियर-भोपाल सुपरफास्ट एक्सप्रेस का संचालन सप्ताह में 05 दिन के स्थान पर प्रतिदिन तथा वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी-प्रयागराज एक्सप्रेस (प्रतिदिन) को डबरा, सोनागिर एवं दतिया स्टेशनों पर ठहराव के साथ ग्वालियर जं. तक विस्तार किये जाने का निर्णय लिया गया है, जिसका विवरण निम्नवत् है:-

गाड़ी संख्या 12198/12197 ग्वालियर-भोपाल सुपरफास्ट एक्सप्रेस का संचालन 05 दिन के स्थान पर प्रतिदिन

गाड़ी संख्या	स्टेशन से-तक नाम	मौजूदा आवृत्ति	वर्तमान आवृत्ति	प्रारम्भिक स्टेशन से प्रभावी तिथि
12198/ 12197	ग्वालियर-भोपाल सुपरफास्ट एक्स.	सप्ताह में 05 दिन (बुध एवं रवि छोड़कर)	प्रतिदिन	ग्वालियर से 26.05.25 एवं भोपाल से 26.05.25

गाड़ी संख्या 11801/11802 वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी-प्रयागराज का विस्तार अब ग्वालियर तक

मौजूदा समय गाड़ी सं.11801 (वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी - प्रयागराज)	प्रस्तावित समय गाड़ी सं.11801 (ग्वालियर-प्रयागराज) आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	मौजूदा समय गाड़ी सं.11802 (प्रयागराज - वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी)	प्रस्तावित समय गाड़ी सं.11802 (प्रयागराज-ग्वालियर) आगमन	प्रस्थान
.....	.....	05:00	ग्वालियर	.....	21:00	.....
	05:36	05:38	डबरा		18:30	18:32
	05:54	05:56	सोनागिर		18:02	18:04
	06:12	06:14	दतिया		17:49	17:51
प्रा. 07:40	07:35	07:40	वी.लक्ष्मीबाई झाँसी	आ. 17:00	17:15	17:25
आ. 18:30	18:30	.....	प्रयागराज	प्रा. 06:05	.....	06:05

- **ग्वालियर से** गाड़ी संख्या 11801, **दिनांक :** 27.05.2025
- **प्रयागराज से** गाड़ी संख्या 11802, **दिनांक :** 26.05.2025

गाड़ी संख्या 11801/11802 ग्वालियर-प्रयागराज एक्सप्रेस (प्रतिदिन) एवं गाड़ी संख्या 12198/12197 ग्वालियर-भोपाल एक्सप्रेस (प्रतिदिन) का निम्न संशोधित संरचना का विवरण :-

गाड़ी संख्या	मौजूदा संरचना	संशोधित संरचना	प्रारंभिक स्टेशन से प्रभावी तिथि
12198/12197 (ग्वालियर-भोपाल)	सामान्य श्रेणी:13, स्लीपर श्रेणी:02,वातानुकूलित तृतीय श्रेणी:01	सामान्य श्रेणी:13, स्लीपर श्रेणी:02, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी:01	ग्वालियर से 26.05.25 एवं भोपाल से 26.05.25
11801/11802 (ग्वालियर-प्रयागराज)	सामान्य श्रेणी:09, स्लीपर श्रेणी:02,वातानुकूलित तृतीय श्रेणी:01		ग्वालियर से 27.05.25 एवं प्रयागराज से 28.05.25

नोटः ट्रेनों की समय-सारणी से सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाईन 139 या Rail Madad Mobile App या वेबसाइट www.railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR 882/25(AS)

अनेक सड़कों पर पेच रिपेयरिंग कर यातायात को बनाया सुगम

ग्वालियर - नगर निगम ग्वालियर द्वारा नागरिकों की सुविधा एवं सुगम यातायात के लिए अभियान चलाकर शहर की विभिन्न सड़कों पर पेंच रिपेयरिंग का कार्य किया जा रहा है।

सहायक यंत्री श्री अमित गुप्ता ने बताया कि नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार निगम के अमले द्वारा निरंतर सुगम यातायात एवं आम नागरिकों की सुविधा के लिए विभिन्न सड़कों पर पेच रिपेयरिंग का काम किया जा रहा है। जिसके तहत हरिशंकरपुरम, अलकापुरी न्यू हाईकोर्ट के पीछे, आदित्यपुरम, एम्पायर रिसोर्ट के पास हाईवे, मोतीझील, मछली मंडी लधेडी, गोल पहाड़िया काला सैयद, पिपरौली रोड कॉलेज पर, गोविंदपुरी हरदौल बाबा मंदिर, बैंक कॉलोनी, टमोटिया पार्क आदित्यपुरम, स्टेडियम के बाहर पीछे वाली रोड सिटी सेंटर गालव जाने वाली रोड, हजीरा स्टैंड एवं चार शहर का नाका, गरगज कॉलोनी गेट वाली रोड सहित अनेक सड़कों पर पेच रिपेयरिंग कराकर यातायात को सुगम बनाया।

स्कूली एवं यात्री वाहनों की फिटनेस व परमिट की जाँच के लिए विशेष मुहिम जारी

बुधवार को 15 वाहनों से वसूला जुर्माना

अब तक 96 वाहनों से वसूला गया 6 लाख से अधिक जुर्माना और 19 वाहन जब्त किए

ग्वालियर / जिले में बगैर परमिट व फिटनेस के चल रहे स्कूली व यात्री वाहनों के खिलाफ कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर विशेष मुहिम जारी है। मुहिम के तहत बुधवार 21 मई को राजस्व, यातायात पुलिस एवं परिवहन विभाग की संयुक्त टीम द्वारा ओवर लोडेड व डिजिट नम्बर प्लेट न पाए जाने पर 15 यात्री / स्कूली वाहनों के खिलाफ चालान की कार्रवाई कर 20 हजार रूपए का जुर्माना वसूला गया।

जिले में पिछले एक हफ्ते से जारी इस मुहिम के तहत अब तक 96 वाहनों से 6 लाख 2 हजार रूपए से अधिक जुर्माना वसूला जा चुका है। साथ ही बगैर फिटनेस व परमिट के मिले 19 वाहन जब्त कर पुलिस अभिरक्षा में खड़े कराए गए हैं। इन वाहनों के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट के प्रावधानों के तहत भी कार्रवाई प्रस्तावित की गई है।

बुधवार को संयुक्त टीम ने ग्वालियर शहर में गोला का मंदिर चौराहा पर चैकिंग प्वॉइंट लगाकर वाहनों की जाँच की। इस संयुक्त टीम में तहसीलदार श्री कुलदीप दुबे, नायब तहसीलदार श्री संजय अगरैया, श्री हरनाम सिंह व श्री प्रदीप महकाले तथा यातायात प्रभारी पूर्व क्षेत्र श्री अभिषेक रघुवंशी व परिवहन निरीक्षक श्री प्रवीण नाहर सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी शामिल थे।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने बगैर परमिट व फिटनेस के चल रहे वाहनों के खिलाफ यह मुहिम लगातार जारी रखने के निर्देश दिए हैं।

सफलता की कहानी

ग्वालियर के युवा बॉक्सर प्रिंस यादव का साई में चयन

साई के एक्सीलेंस सेंटर में चयनित होने वाले प्रदेश के पहले बॉक्सर हैं प्रिंस यादव

नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने किया सम्मान एवं दीं शुभकामनायें

ग्वालियर / ग्वालियर के खेल प्रेमियों के लिये गर्व का विषय है। शहर के उदयीमान मुक्केबाज (बॉक्सर) प्रिंस यादव का चयन स्पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (साई) द्वारा रोहतक हरियाणा में संचालित देश की प्रतिष्ठित संस्था नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में हुआ है। इस संस्था के लिये चयनित होने वाले प्रिंस यादव मध्यप्रदेश के पहले बॉक्सर हैं। प्रिंस यादव नगर निगम ग्वालियर के खेल प्रसाल के खिलाड़ी हैं। उन्होंने सब जूनियर, स्कूल स्तरीय राष्ट्रीय चैम्पियनशिप सहित प्रदेश व राष्ट्र स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में गोल्ड, सिल्वर व ब्रॉज मैडल हासिल कर ग्वालियर का नाम रोशन किया है।

साई में चयन होने पर नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय सहित उनके कोच एवं शहर के खिलाड़ियों व खेल प्रेमियों ने प्रिंस का शॉल-श्रीफल भेंट कर सम्मान किया। साथ ही उन्हें स्मृति चिन्ह भी प्रदान किया। नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने उनके उज्वल भविष्य की कामना की तथा नगर निगम की ओर से उन्हें हर संभव सहयोग का भरोसा दिलाया। सन् 2020, प्रिंस यादव की उम्र 10 वर्ष थी तब से एकलव्य खेल परिसर के बॉक्सिंग रिंग में कोच श्री संतोष अर्गल के अंडर में कोचिंग लेना प्रारंभ किया। वित्तीय स्तिथि ठीक न होने के कारण और सीखने की लगन एकलव्य खेल परिसर के कोच संतोष अर्गल ने बॉक्सिंग किट उपलब्ध करायी जिससे प्रिंस की ट्रेनिंग जारी रही। परिवार की वित्तीय स्तिथि ठीक न होने के कारण प्रिंस यादव को एकलव्य खेल परिसर मैं बॉक्सिंग की ट्रेनिंग भी सहायक नोडल खेल अधिकारी द्वारा खेलने के लिए बिना फ़ीस के उपलब्ध करवायी गई जिससे उसके खेल में निरंतर निखार आया। प्रिंस की माताजी जो कि गृहिणी हैं, पिताजी श्री सुरजीत यादव जो कि पहलवानी करते थे और उसका एक भाई है जो परिवार का एक मात्र मध्यम है घर की व्यवस्था के लिये। प्रिंस यादव का चयन स्पोर्टस अथॉरिटी ऑफ

अवैध निर्माण हटाने के साथ ही मदाखलत अमले ने हटाया अवैध अतिक्रमण

ग्वालियर- नगर निगम की भवन शाखा द्वारा स्थाई एवं मदाखलत अमले द्वारा सुगम यातायात एवं नागरिकों की सुविधा के लिए निरंतर अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जा रही है। भवन अधिकारी श्री राकेश कश्यप अपनी जानकारी देते हुए बताया कि माननीय उच्च न्यायालय खंडपीठ ग्वालियर की याचिका क्रमांक 35705/2024 में पारित आदेश के पालन में श्रीमान आयुक्त महोदय के निर्देश पर रिवर कॉलोनी स्थित ओमप्रकाश झा की द्वारा नगर निगम से प्राप्त भवन निर्माण स्वीकृति के अंतर्गत स्वीकृति के विपरीत किए गए अवैध निर्माण को आज दिनांक 21/05/25 को पुलिस बल एवं मदाखलत के सहयोग से स्वीकृति के विपरीत किए गए अवैध निर्माण की तुड़ाई की गई। कार्यवाही के दौरान सिटी प्लानर श्री ए पी स जादौन, सहायक सिटी प्लानर श्री महेंद्र अग्रवाल, भवन अधिकारी श्री राकेश कश्यप, क्षेत्राधिकारी श्री राजेश रावत, मदाखलत विभाग से श्री शैलेन्द्र चौहान , श्री विशाल जाटव एवं मदाखलत दल सीएसपी मुरार श्री जंगलें जी एवं पुलिस बल उपस्थित रहा। स्थल पर संबंधित भवन स्वामी द्वारा तुड़ाई का विरोध किया गया किंतु पर्याप्त पुलिस बल उपस्थित होने के कारण संबंधित को वहां से हटाकर तुड़ाई पूर्ण की गई.।

इसके साथ ही निगमायुक्त श्री संघ प्रिय के निर्देशानुसार उपायुक्त श्री सत्यपाल सिंह चौहान के निर्देशन में शहर में सुगम यातायात हो इसके लिए प्रतिदिन यातायात में बाधक अतिक्रमण को हटाने की कार्यवाही की जा रही है।जिसके तहत राजमाता चौराहे से आरोग्यधाम हॉस्पिटल तक यातायात को अवरूद्ध कर रहे हाथ ठेले एवं गुमटी हटाई जाकर जप्ती की कार्यवाही की गई।

संपादकीय

कोई और पद स्वीकार नहीं

हाल में सर्वोच्च न्यायपालिका के जजों का जिस तरह का आचरण रहा है, उसे देखते हुए जस्टिस संजीव खन्ना के इस एलान का महत्त्व और भी अधिक महसूस हुआ है कि रिटायरमेंट के बाद वे कोई पद स्वीकार नहीं करेंगे। यह उत्कृष्ट उदाहरण है। निवर्तमान प्रधान न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना ने अपने कार्यकाल के आखिरी दिन यह प्रशंसनीय घोषणा की कि रिटायरमेंट के बाद वे कोई और पद स्वीकार नहीं करेंगे। इस तरह जस्टिस खन्ना ने एक बेहतरीन मिसाल कायम की है। हाल में सर्वोच्च न्यायपालिका के जजों का जिस तरह का आचरण रहा है, उसे देखते हुए इस एलान का महत्त्व और भी अधिक महसूस हुआ है। हालांकि इस अप्रिय घटनाक्रम की शुरुआत कई दशक पहले हो गई थी, लेकिन हाल के वर्षों में यह एक बड़ी बीमारी बन गई। रिटायर होते ही राज्यपाल, राज्यसभा के सदस्य, आयोगों या पंचाटों के अध्यक्ष आदि जैसे पद स्वीकार करने वाले जजों की सूची लंबी होने लगी। नतीजा हुआ है कि आज अदालतें जब कोई राजनीतिक महत्त्व का फैसला देती हैं, तो सार्वजनिक चर्चाओं में संबंधित न्यायाधीशों की मंशा या उनकी आगे की गणना की चर्चा होने लगती है। इस तरह न्यायिक निर्णयों की पवित्रता प्रभावित हुई है। उसका असर न्यायपालिका की साख पर पड़ा है। कभी सार्वजनिक दायरे में ये बहस उठी थी कि जजों और ऊंचे पदों पर आसीन नौकरशाहों को रिटायरमेंट के बाद अगला कोई पद स्वीकार करने के पहले कुछ वर्षों का एक कूलिंग पीरियड होना चाहिए। मगर व्यवहार में इसके विपरीत रुझान आगे बढ़ा और आज वो चर्चा बेमायने मालूम पड़ती है। मगर वो जन आकांक्षाएं खत्म नहीं हुई हैं। बल्कि सिर्फ कार्यपालिका, नौकरशाही और विधायिका से जुड़ी शख्सियतों को लेकर समाज में व्यग्रता बढ़ी है और धीरे-धीरे न्यायपालिका उसके दायरे में आ गई है। इससे पूरी राज्य-व्यवस्था की साख प्रभावित होने की आशंका पैदा हो गई है। इस पृष्ठभूमि में जस्टिस खन्ना की घोषणा ताजा हवा के झोंके की तरह आई है। प्रधान न्यायाधीश के रूप में उनका छोटा कार्यकाल भी एक बेहतर अहसास छोड़ गया है। उनके अनेक पूर्ववर्तियों के कार्यकाल में जिस तरह के विवाद उठे, जस्टिस खन्ना का कार्यकाल उनसे मुक्त रहा। उन्होंने कमोबेश उन अपेक्षाओं को पूरा किया, जो एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में न्यायपालिका प्रमुख से होती है। आशा है, उनके उत्तराधिकारी ऐसी ही विरासतों का अनुकरण करेंगे और न्यायपालिका की गरिमा को बहाल करने में सहायक बनेंगे।

विज्ञान के संवाहक महान वैज्ञानिक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर

(विवेक रंजन श्रीवास्तव-विभूति फीचर्स)

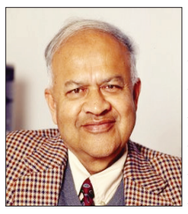

87 वर्ष की आयु में पुणे में महान वैज्ञानिक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर का निधन हो गया। साहित्य जगत, उनकी विज्ञान कथाओं के लिए उन्हें सदा याद करेगा । उन्होंने हिंदी, मराठी और अंग्रेजी में 40 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें विज्ञान कथाएँ, आत्मकथा और शोधग्रंथ शामिल हैं। उनकी किताबों ÷वामन की वापसी÷ और ÷धूमकेतु÷ जैसी कृतियों ने युवाओं को विज्ञान के प्रति आकर्षित किया। दूरदर्शन पर प्रसारित ÷ब्रह्मांड÷ श्रृंखला के माध्यम से उन्होंने आम लोगों को खगोल विज्ञान के रहस्यों से परिचित कराया। 2014 में उनकी मराठी आत्मकथा ÷चार नगरातले माझे विश्व÷ को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला।

डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर का जन्म 19 जुलाई 1938 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। उनके पिता, विष्णु वासुदेव नार्लीकर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) में गणित के प्रोफेसर थे, जबकि माता सुमति नार्लीकर संस्कृत की विदुषी थीं। इस शैक्षिक पारिवारिक वातावरण ने बचपन से ही जयंत में वैज्ञानिक चेतना का बीजारोपण किया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी के सेंट्रल हिंदू बॉयज स्कूल में हुई । उन्होंने ब्ना से स्नातक किया। 1959 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से गणित में डिग्री प्राप्त की और 1963 में खगोल भौतिकी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

डॉ. नार्लीकर ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति के ÷स्थिर अवस्था सिद्धांत÷ (Steady State Theory) को विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभाई, जो बिग बैंग सिद्धांत के विकल्प के रूप में प्रस्तुत हुआ। उन्होंने ब्रिटिश खगोलशास्त्री फ्रेड हॉयल के साथ मिलकर ÷हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत÷ प्रतिपादित किया, जो आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत और माक सिद्धांत का समन्वय था। यह सिद्धांत ब्रह्मांड के निरंतर विस्तार और नई पदार्थ निर्माण की प्रक्रिया पर आधारित था। अपने इस कार्य के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली, हालाँकि बाद में बिग बैंग सिद्धांत प्रमुखता पा गया, लेकिन नार्लीकर ने वैज्ञानिक बहस को नई दिशा दी। भारत में अनुसंधान और संस्थान का निर्माण उनके ही निर्देशन में हुआ । 1972 में अमेरिका से भारत लौटकर उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) में सैद्धांतिक खगोल भौतिकी समूह का नेतृत्व किया। 1988 में उन्होंने पुणे में इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (IUCAA) की स्थापना की, जो आज विश्वस्तरीय शोध केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित है। 2003 में सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे द्दष्ट से एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में जुड़े रहे। डॉ. नार्लीकर को विज्ञान के क्षेत्र में कई पुरस्कार और सम्मान मिले। उनके योगदान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।1965 में उन्हें पद्म भूषण सम्मान दिया गया। महज 26 वर्ष की आयु में यह सम्मान प्राप्त करने वाले सबसे युवा वैज्ञानिकों में से वे एक हैं। कलिंग पुरस्कार (1996) यूनेस्को द्वारा विज्ञान संचार के लिए उन्हें प्रदान किया गया । वर्ष 2004 में भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से उन्हें सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र भूषण जो महाराष्ट्र का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है उनको वर्ष 2011 में दिया गया था। डॉ. नार्लीकर न केवल एक खगोलशास्त्री थे, बल्कि विज्ञान के संवाहक, शिक्षक और लेखक भी थे। उन्होंने भारत को वैश्विक विज्ञान मानचित्र पर स्थापित किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

शब्द सामर्थ्य -055

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. आय व्यय का लेखा-जोखा, गणित, एकाउंट 3. विनती, अदब 6. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 7. मूल्यवान, बहुमूल्य 8. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 10. बराबर, सम 12. मुख, चेहरा 14. अनुकृति, अनुकरण, असल का विलोम 17. दिमाग, मस्तिष्क 18. मनोहर, सुंदर, इच्छित, प्यारा 19. गर्मी, ताप 21. रसिया, प्रेमी, रसपान करने वाला 23. दबाव, भार 24. भीख 25. काम से जी चुराने वाला, आलसी।

ऊपर से नीचे

1. साहस, वीरता, बहादुरी 2. बहिन, प्रवाहित होना 3. प्रणय क्रीडा, सुखोपभोग, हावभाव 4. विश्वास, प्रतीति 5. इंतजार 9. खाने-पीने का सामान, रसद 11. नशीला, मदभरा 12. घायल, जख्मी 13. झुकना, प्रणाम, नमस्कार 14. दृष्टि, निगाह 15. तीव्रइच्छा 16. अर्थ, अभिप्राय, स्वार्थ 20. इम्तिहान, योग्यता आदि को परखना 22. जुल्म, अन्याय 23. पत्नी, बीवी, एक प्रत्यय।

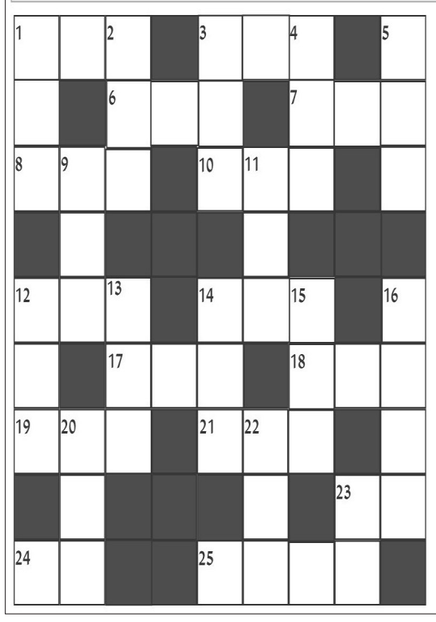

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 054 का हल

दा	ढ़ी	■	की	■	खा	सो	आ	म
वा	■	त	म	न्ना	■	■	जा	■
न	जा	क	त	■	बा	अ	द	ब
ल	■	ली	■	वि	ला	प	■	हा
■	अ	फ	सा	ना	■	मा	हि	र
दा	ब	■	■	श	गु	न	■	■
न	■	उ	प	का	र	■	शि	■
व	■	त्स	■	र	■	त	क	ला
■	सा	व	न	■	गु	रु	वा	र

सू- दोकू क्र.055

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.054 का हल

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

राशिफल

मेष आज आपका दिन खुशहाल रहेगा। आज किसी बड़े मामलों पर समझौता करने और सहयोग करने के लिए आप तैयार रहें। कई दिनों से रुके हुए काम आज पूरे हो जाएंगे। धैर्य से आज आपके सारे काम बनते नजर आएंगे। आज कई महत्वपूर्ण कामों में बदलाव होंगे। इस स्थिति में किस्मत आपका साथ देगी। निवेश करने से पहले अपने बड़ों की राय जरूर लें। अध्यापकों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आपके प्रमोशन होने के योग बने हुए हैं। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। आज स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा।

वृषभ आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज किसी घर के काम में आपको जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, जिससे कार्य जल्द पूरा करने में सफलता मिलेगी। ऑफिस के कामों में दूसरों की राय लेने से बचें, बेहतर यही होगा की किसी अपनों की काम में मदद लें तो काम आसानी से पूरे होंगे। आपकी मेहनत आज आपके जीवन में सफलता के रंग भर देंगी। आज पारिवारिक रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी। आज के दिन आपको अलग-अलग स्रोतों से फायदा मिलने की उम्मीद है। लवमेट के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मिथुन आज आपका दिन उत्साह से भरा रहेगा। आपको महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। आज कोर्ट कचहरी के मामलों में जीत हासिल हो सकती है। आज समाज में मान-सम्मान में बढ़ोतरी होगी। आज कारोबार में सफलता और नौकरी में तरक्की हो सकती है। आज सामाजिक क्षेत्र में आपकी सराहना होगी। आज कार्यों में किसी मित्र का सहयोग मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर रहेगी। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। जीवनसाथी पहले किया वादा आज पूरा करेंगे, इससे आपको प्रसन्नता होगी।

कर्क आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आपकी गुम हुई वस्तु आज अचानक मिल जाएगी। आज आपको इनवेस्ट में लाभ होगा। इस राशि वाले लोगों को अपने जीवनसाथी से आज गिफ्ट मिल सकता है, जिससे आप दोनों के रिश्ते में मधुरता बढ़ेगी। आज दूसरों की बात भी अच्छे से समझने की कोशिश करें, इससे आपको लाभ मिलेगा। आज दोस्त आपसे मदद के लिए कह सकते है। सामने आयी समस्याओं को सुलझाने में आप सफल होंगे। आज कानूनी मामलों में आपको जीत मिलेगी। रोजगार की तलाश कर रहे लोगों को आज रोजगार मिलने की संभावना है।

सिंह आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। आज आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रही रहेगी। आज अपने कामों में कामयाबी का परचम लहरायेंगे। आज खुद को मेंटली और फिजिकली फिट महसूस करेंगे। अगर आप नये वाहन को खरीदने की सोच रहें है तो खरीद लें। व्यापार में आज आपको लाभ मिलने के आसार नजर आ रहें हैं। पुराने मित्रों से आज आपकी मुलाकात हो सकती है। इस राशि के लवमेट के लिए आज का दिन उत्तम नज़र आ रहा है। आज आप परिवार के साथ मंदिर भगवान के दर्शन करने जाएंगे।

कन्या आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। आपका रुझान रचनात्मक कार्यों की तरफ ज्यादा रहेगा। नई प्रॉपर्टी खरीदने के लिए आज का दिन शुभ है। घर की साज-सजावट के लिए घरेलू उपकरणों से जुड़ी खरीददारी करने के लिए जीवनसाथी के साथ मार्केट जाएंगे। आज सोच-समझकर ही दूसरों की मदद करें। आज आपका स्वास्थ्य पहले से काफी अच्छा रहेगा। आज अध्यात्म के प्रति आपकी रुचि रहेगी। आज सहयोगी कार्य में आपकी मदद करेंगे। ऑफिस के किसी काम की वजह से आज आपको दूसरे शहर जाना पड़ सकता है।

तुला आज आपका दिन खुशियों भरा रहेगा। आज किसी काम को पूरा करने का प्रयास सफल रहेगा। आज परिजनों से शुभ समाचार मिलेंगे और आपके आत्मसम्मान में वृद्धि होगी। आर्थिक तौर पर यह समय आपके लिए फूंक-फूंक कर कदम रखने वाला होगा। आपके खर्चे बढ़ने संभव हैं। आज किसी व्यक्ति विशेष से आपको मदद मिल सकती है। रात को बाहर दोस्त के साथ डिनर करने जाएंगे। घर से दूर रहकर जॉब कर रहे लोगों को आज अपने परिवार वालों से मिलने का मौका मिलेगा। लवमेट कहीं घूमने का प्लान बनाएंगे।

वृश्चिक आज का दिन लकी है। आज के दिन की शुरुआत अच्छे विचारों से होगी। जो लोग मिट्टी के व्यवसाय से जुड़े है उनके लिए आज का दिन फायदेमंद रहेगा। आज मेहनत और व्यवहार के कारण आपको धनलाभ होगा। विरोधी पक्ष आज आपसे दूरियां बनाकर रहेगा। इस राशि के लोगों को आज पारिवारिक सुख और शांति का लाभ होगा। आज आपका ज्यादा समय माता-पिता के साथ बीतेगा। अलग-अलग स्त्रोतों से धन लाभ के अवसर बनेंगे।

धनु आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज मनोबल का स्तर अच्छा रहने के कारण आपके कार्य अच्छी गति से आगे बढ़ेंगे। आज बिजनेस में परिवर्तन के आसार दिख रहें हैं। ऑफिस में आपकी क्रिएटिविटी पहले से अच्छी बनेगी। आज भाग्य पूरी तरह से आपका साथ देगा। घर के किसी काम को पूरा करने के लिए भाई के साथ विचार-विमर्श करेंगे। इलेक्ट्रोनिक का सामान खरीदने के लिए आज का दिन शुभ हैं। आज अपनी कीमती वस्तु को संभालकर कर रखें। आज लवमेट से उपहार मिलेगा, जिससे पूरे दिन आपका मन प्रसन्न रहेगा।

मकर आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। आज व्यापार को बढ़ाने के लिए नए अवसर मिलेंगे। आज शैक्षणिक कार्यों में मन लगेगा। आज राजनीति में सफलता मिलेगी। पहले किये हुए निवेश का आज लाभ मिलेगा। इस राशि के लोगों को जीवनसाथी से आज बहुत सारा प्यार मिलेगा, जीवनसाथी के साथ किसी धार्मिक स्थल पर जाने का प्लान बनाएंगे। आज मेहनत के मुताबिक सफलता हासिल होगी। आय के नए स्रोत मिलने से आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी। करियर को बेहतर बनाने के लिए किसी दोस्त से चर्चा करेंगे।

कुंभ आज का दिन आपके जीवन में नई खुशियां लेकर आएगा। आपका रुझान अध्यात्म के प्रति अधिक रहेगा। माता-पिता के साथ कहीं मंदिर दर्शन के लिए जाएंगे। किसी महत्वपूर्ण कार्य की वजह से मनोरंजन के लिए बनाया हुआ प्लान आज टल सकता है। घर में आज समय ज्यादा व्यतीत करेंगे पैसों से जुड़ी समस्या आज खत्म हो जाएगी। व्यवसाय को बढ़ाने के लिए किसी अनुभवी की सलाह लेंगे। इस राशि के स्टूडेंट के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। अगर इंटरव्यू के लिए जा रहे है तो अपने आत्मविश्वास में कमी न आने दें।

मीन आज का दिन आपके लिए बहुत बढ़िया रहेगा। आपको अपने कार्यक्षेत्र में सफलता हासिल होने वाली है। आज करियर को लेकर लाभ मिलने वाला है। जरूरी कार्यों को पूरा करने में किसी मित्र से सहयोग मिलेगा। आज परिवार में एक दूसरे के साथ आपसी सामंजस्य बेहतर होंगे। आज विरोधी आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, इसलिए जितना हो सके आप उनसे दूरियां बनाकर रहें। आज सामाजिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी, आज अपना काम ध्यानपूर्वक करें।

आओ चलें खुशहाली की ओर.....

विश्वास, प्रेम और जीवन निर्माण के मंत्र

(नरेंद्र शर्मा परवाना-विनायक फीचर्स)

यह लेख राष्ट्र संत उपाध्याय गुप्ति सागर महाराज के साथ हुई चर्चा पर आधारित है। उनकी ज्ञान वर्धक दिव्यवाणी को लेख के रुप में प्रस्तुत किया गया है इससे तनाव से मुक्ति मिलेगी, सफलता की राह आसान होगी, आत्मिक शांति प्राप्त होगी। बस इसको पढ़िए और उसके अनुसार जीवन में कार्य कीजिए, आपको आलौकिक आनंद मिलेगा। मानव जीवन की दिशा और दशा उसके विचारों और मूल्यों पर निर्भर करती है। राष्ट्र संत उपाध्याय डॉ. गुप्ति सागर महाराज का जीवन और उनके विचार न केवल प्रेरणास्रोत हैं, बल्कि जीवन को सुंदर, सुलझा हुआ और सार्थक बनाने की राह दिखाते हैं। यह लेख उनके साथ हुए गहन संवाद और उनके अमूल्य विचारों पर आधारित है, जिसमें उन्होंने विश्वास, प्रेम, मैत्री और जीवन निर्माण के सिद्धांतों को सहज, सरल लेकिन अत्यंत प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विश्वास ही व्यक्तित्व को ऊँचाई देता है

डॉ. गुप्ति सागर महाराज कहते हैं कि विश्वास पर विश्वास करो, विश्वास ही व्यक्तित्व की अंतिम ऊंचाई है। ज्ञान, धन और शब्दों का प्रभाव तब तक है जब तक विश्वास साथ है। विश्वास के बिना सब कुछ निरर्थक हो जाता है।

एक प्रेरक कथा के माध्यम से वे समझाते हैं कि ज्ञान, धन और विश्वास तीन मित्र थे। जब उन्हें बिछुड़ना पड़ा, तो ज्ञान ने कहा वह मंदिरों, मस्जिदों और विद्यालयों में मिलेगा, धन ने कहा वह अमीरों के पास होगा। लेकिन विश्वास चुप था। जब उससे पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि मैं एक बार चला गया तो फिर कभी नहीं लौटूंगा।

विश्वासघात विष के समान है

आज का युग स्वार्थपरता से भरा है। ऐसे में लोग भौतिक चीजों को महत्व देकर विश्वास को खोते जा रहे हैं। महाराज जी चेताते हैं विश्वासघात विषघात के समान है। जो व्यक्ति विश्वासघात करता है, उसका चरित्र गिर जाता है।

प्रेम और विश्वास का गहरा संबंध

विश्वास प्रेम की पहली सीढ़ी है, वे कहते हैं। विश्वास से ही प्रेम उपजता है, और प्रेम संयम एवं तप का फल है। कबीरदास की पंक्तियां जो घट प्रेम संचरै, सोघाट जान मसान इसी सत्य को दर्शाती हैं।

प्रेम- आनंद की अभिव्यक्ति

डॉ. गुप्ति सागर प्रेम को आनंद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानते हैं। स्वार्थ और शरीर प्रधानता से प्रेम और विश्वास दोनों पर आघात होता है। एक बार जो विश्वास टूट गया, उस पर फिर विश्वास करना उचित नहीं।

विश्वास की शक्ति से होती है उन्नति

विश्वास मैत्री का मूल है। विश्वास के बल पर व्यक्ति बड़ी से बड़ी विपत्ति को पार कर सकता है। श्रीराम और सुग्रीव की मैत्री इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। राष्ट्रों और समाजों के बीच भी विश्वास से ही मैत्री और प्रगति संभव है।

संकल्प, सदाचार और आत्मविश्वास ही हैं मार्ग के सहायक

महाराज श्री सिखाते हैं कि दोष ढूंढने से समाधान नहीं निकलता। जीवन में चाटुकारिता से बचना, अंधविश्वास नहीं करना, और आत्मविश्वास से अच्छे कार्यों की ओर बढ़ना ही जीवन को सफल बनाता है। विश्वास हिमालय की तरह अडिग होता है वह कोमल पुष्प नहीं जो झोंके से गिर जाए, बल्कि वह शक्ति है जो सागर पार करवा दे और पर्वत हिला दे।

अफ्रीका महाद्वीप में चिंताजनक स्थिति

भारत डोगरा

वर्ष 2025 के आरंभ में अफ्रीका महाद्वीप में चिंताजनक स्थिति को देखते हुए यहां शांति प्रयासों को और सशक्त करने की चर्चा थी।

अब लगभग चार महीनों के बाद हम जो स्थिति देख रहे हैं, वह चिंताओं को कम नहीं करती है अपितु और बढ़ाती ही है क्योंकि इस दौरान सबसे संवेदनशील क्षेत्रों-सोमालिया, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो तथा सूडान एवं दक्षिण सूडान के हालात तेजी से और बिगड़े हैं।

सूडान में दो वर्ष से यानी अप्रैल, 2023 से गृह युद्ध चल रहा है। इससे पहले यहां अन्य गृह युद्ध भी हो चुके हैं और सूडान से अलग होकर एक नया देश वर्ष 2011 में ही बन चुका है। अत- इस क्षेत्र में वैसे ही अमन-शांति बनाए रखने की बहुत जरूरत है पर वास्तविकता इससे विपरीत रूप में सामने आ रही है। सूडान में दो वर्षो से चल रहे गृह युद्ध में 150,000 लोग मारे गए हैं और 1 करोड़ 20 लाख लोग विस्थापित हुए हैं। तिस पर यदि आप यह याद रखें कि इनमें से बहुत से लोग पहले से अभावग्रस्त रहे हैं तो आप समझ सकते हैं कि यहां की मानवीय त्रासदी कितनी गहरी हो चुकी है। महिलाओं सहित अनेक लोगों को बहुत अत्याचार सहने पड़े हैं।

चूंकि सूडान के कुछ पड़ोसी देश स्वयं अभाव और हिंसा से त्रस्त हैं अत- बड़ा सवाल यह है कि सूडान की हिंसा से बचते हुए लोग आखिर, सुरक्षा के लिए जाएं तो जाएं कहां। इस स्थिति को दक्षिण सूडान की तेजी से बिगड़ती स्थिति ने और विकट बना दिया है। वर्ष 2011 में स्वतंत्र देश के रूप में अस्तित्व में आने के बाद वर्ष 2013 में दक्षिण सूडान में गृह युद्ध आरंभ हो गया था। यह पांच वर्ष तक चला। अनुमान है कि इसमें लगभग 4 लाख लोग मारे गए और लगभग 40 लाख लोग विस्थापित हुए। वर्ष 2018 में यह देश सुलह-समझौते की ओर बढ़ा। जो समझौता हुआ, उसमें हिंसा तो थम गई पर इसका आधार मजबूत नहीं था। इस वर्ष यह कमजोर आधार भी टूटने लगा है।

जिन मुख्य नेताओं को विभिन्न अपने जातीय आधार पर सरकार में शीर्ष के स्थान दिए गए थे, उनमें आपसी मतभेद और टकराव आ गया है और डर है कि जातीय हिंसा फिर भड़क सकती है। उधर बड़े पड़ोसी देश सूडान में जो गृह युद्ध चल रहा है, उसका एक गुट भी दक्षिण सूडान में हिंसा भड़काने में लगा है। इस कारण यह खतरा बढ़ गया है कि इन दोनों देशों की हिंसा आपस में मिल कर एक और भी बड़ी मानवीय त्रासदी का रूप ले सकती है। इस हिंसा के तार कहीं न कहीं संसाधनों और भूमि को हड़पने के कुप्रयासों से जुड़ते हैं और इस होड़ में शक्तिशाली विदेशी तत्व भी जुड़े हुए हैं।

इस कारण यह संभावना बढ़ जाती है कि विभिन्न विरोधी गुटों को अलग-अलग विदेशी स्रोतों से धन मिलता रहेगा जिससे वे अधिक विध्वंसक हथियार खरीद सकेंगे और इस तरह विनाश बढ़ता रहेगा। इसी तरह यदि डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो जैसे बड़े और महत्त्वपूर्ण देश को देखें तो वहां सोने और अन्य बहुमूल्य खनिजों की बहुत उपलब्धि है और इसे हड़पने के प्रयासों में लगी ताकतें हिंसक हमले करते रहती हैं। यह प्रवृत्ति तब और तेज हो जाती है जब यहां की केंद्रीय सरकार कमजोर पड़ती है। ये हमलावर तव विदेशों से तो सहायता प्राप्त करते ही हैं साथ में कई बार तो विदेशी सेना स्वयं बहुत प्रत्यक्ष रूप में हमले में नजर आती है। हाल के महीनों में खनिजों की दृष्टि से संपन्न पूर्वी क्षेत्रों में विदेश से जुड़े सैनिक तेजी से आगे बढ़े हैं। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि हाल के दशकों में अफ्रीका का सबसे बड़ा युद्ध डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो को केंद्र में रख कर ही हुआ था जिसमें आसपास के अनेक अन्य देश भी शामिल हो गए थे। इस इतिहास को देखते हुए इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है कि यहां की स्थिति अधिक विकट न बने।

इसके अतिरिक्त इथिओपिया, लीबिया, मोजाम्बिक, सोमालिया और सेहल क्षेत्र के देशों में हाल में स्थितियां चिंताजनक रही हैं। मानवीय संकट बढ़ती भूख, विस्थापन और शरणार्थियों की समस्या के रूप में विकट हो रहा है। जलवायु बदलाव के दौर में प्रतिकूल मौसम की मार अनेक देशों को सहनी पड़ रही है। बढ़ते अभाव और भुखमरी के बीच बाहर से पहुंचने वाली सहायता सामग्री और खाद्य भी जरूरत से बहुत कम पड़ रहे हैं। इस स्थिति में अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अफ्रीका के लोगों के दुख-दर्द को कम करने में वहां अमन-शांति कायम करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। हाल के अनुभवों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अलगाववाद के रूप में समस्याओं के समाधान को खोजना निर्थक ही नहीं खतरनाक भी सिद्ध हो रहा है। सूडान में बढ़ती समस्याओं के बीच कुछ लोगों ने यह समाधान खोजा कि अपना अलग देश दक्षिण सूडान बना लें।

अलग होकर यह नया देश बन भी गया और इसे मान्यता भी मिल गई। पर इसके बावजूद कुछ ही समय बाद दक्षिण सूडान का अपना गृह युद्ध भी आरंभ हो गया। अब स्थिति यह है कि सूडान में बेहद हिंसक युद्ध चल रहा है और दक्षिण सूडान के हालात यदि समय रहते नहीं संभाले गए तो यह देश नये गृह युद्ध की ओर जा सकता है। सोमालिया में भी यही स्थिति देखी जा सकती है। यहां काफी समस्याएं बढ़ जाने के बाद देश का एक भाग सोमालीलैंड के रूप में वर्ष 1991 में अलग हो गया, हालांकि इसे संयुक्त राष्ट्र संघ के स्तर पर या अन्य व्यापक स्तर पर मान्यता नहीं मिल सकी पर कुछ समय बाद सोमालीलैंड में अपने झगड़े आरंभ हो गए। हाल के वर्षो में ये बढ़ गए और गृह युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। हिंसक झड़पों के बाद एक बड़े भाग ने अपना अलग अस्तित्व बनाने की कोशिश की। कुछ समय पहले, इस वर्ष अप्रैल में, इसका विलय सोमालिया में हो गया। इस तरह काफी हिंसा के बाद सोमालीलैंड का एक बड़ा भाग तो वापस सोमालिया में ही पहुंच गया।

दूसरी ओर, सोमालिया में भी आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं और दो अन्य क्षेत्र सोमालिया से फिर अलग होने की स्थिति में हैं। इस तमाम हिंसा में जनसाधारण पिसते रहे हैं। उधर विभिन्न विदेशी साधन-संपन्न ताकतें भी इस हिंसा को भड़का ही रही हैं। इनमें से कुछ देश सोमालिया की मदद कर रहे हैं तो कुछ सोमालीलैंड की। उनके द्वारा दी गई सहायता से अधिक तबाही हो रही है।

सोमालीलैंड में कुछ विदेशी ताकतें सैन्य अड्डा बनाना चाहती हैं तो सोमालीलैंड को इस आधार पर और समर्थन मिल सकता है, पर सोमालिया का कहना है कि ऐसी भूमि लीज पर देने का हक केवल सोमालिया को है, सोमालीलैंड को नहीं है और इस कारण यहां के टकराव और बढ़ रहे हैं। अत- इन विभिन्न अनुभवों से सबक लेते हुए अलगाववाद और विशेषकर हिंसक अलगाववाद को छोड़ कर सार्थक बदलाव की अहिंसक राह पर चलने के साथ अमन-शांति के व्यापक प्रयास करने चाहिए।

शेयर बाजार तेजी के साथ खुला

मुम्बई, (ए.)। भारतीय शेयर बाजार बुधवार को सुबह तेजी से खुला। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये बढ़त एशियाई बाजारों में उछाल के साथ ही वाहन और दवा कंपनियों के शेयरों में लिवाली (खरीदारी) हावी होने से आई है। आज सुबह महिंद्रा एन्ड महिंद्रा, एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक के शेयरों में तेजी रही। विदेशी निवेशकों के सकारात्मक रुख से भी बाजार को बल मिला। इससे 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 140 अंक ऊपर आकर 81,327.61 पर खुला। सुबह ये 803.97 अंक करीब 0.99 फीसदी की बढ़त लेकर 81,990.41 पर था। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 29 के शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। इंडसइंड बैंक के शेयरों में ही गिरावट थी। वहीं 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 बढ़त के साथ ही 24,744.25 अंक पर खुला। सुबह यह 253.50 अंक तकरीबन 1.03 फीसदी की बढ़त के साथ ही 24,937.40 पर कामकाज कर रहा था।

निफ्टी मिडकैप और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स 0.83 फीसदी और 0.63 फीसदी ऊपर थे। सेक्टरोल मोर्चे पर रुझान मिला-जुला रहा। निफ्टी आईटी में 0.4 फीसदी की गिरावट आई, जबकि निफ्टी फार्मा इंडेक्स में 1.4 फीसदी की बढ़त रही। वहीं गत दिवस बाजार गिरावट पर बंद हुआ।

वहीं आज सेंसेक्स की कंपनियों में सन फार्मा , नेस्ले इंडिया, अल्ट्राटेक सीमेंट, एचयूएल, एचडीएफसी बैंक, टाटा मोटर्स और मारुति सुजुकी के शेयरों में सबसे ज्यादा बढ़त रही। इनमें 0.5 फीसदी से 1.5 फीसदी तक की तेजी आई जबकि इटरनल, इंडसइंड बैंक, अदाणी पोर्ट्स, कोटक बैंक, बजाज फाइनेंस और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में गिरावट रही।

वहीं इससे पहले एशियाई बाजारों में बुधवार को तेजी रही। जबकि वॉल स्ट्रीट पर छह दिन से चल रहा बढ़त का सिलसिला समाप्त हो गया। जापान का निक्केई इंडेक्स सपाट कारोबार कर रहा था। जबकि ब्रोडर टॉपिक्स इंडेक्स 0.27 फीसदी बढ़ा। कोस्पी में 1.14 फीसदी की तेजी आई और एएसएक्स 200 में 0.6 फीसदी की तेजी आई। वॉल स्ट्रीट पर एसएंडपी 500 में 0.39 फीसदी की गिरावट रही। नैस्डैक कंपोजिट में 0.38 फीसदी की गिरावट आई और डॉव में 0.27 फीसदी की गिरावट आई। यह गिरावट टेक शेयरों के कारण आई। टेक क्षेत्र में 0.5 फीसदी की गिरावट आ। एनवीडिया में 0.9 फीसदी की गिरावट रही। इसके अलावा एएमडी, मेटा, एप्पल और माइक्रोसॉफ्ट के शेयर भी गिरे। वहीं विदेशी निवेशकों ने 10,016.10 करोड़ रुपये के शेयर बेचे जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 21 मई को 6,738.39 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

दूसरी मिड-साइज़ 5-सीटर एसयूवी लॉन्च करेगी मारुति सुजुकी

नई दिल्ली, (ए.)। मारुति सुजुकी कंपनी अपनी दूसरी मिड-साइज़ 5-सीटर एसयूवी लॉन्च करने जा रही है। इस नई एसयूवी का नाम 'एस्कुडो' रखा जा सकता है, जिसका कोडनेम वाय 17 है। यह मॉडल ब्रेज़ा और ग्रैंड विटारा के बीच प्लेस होगा और मारुति सुजुकी के एरीना डीलरशिप नेटवर्क पर उपलब्ध होगा। इस नई एसयूवी को 'ह्युंडई क्रेटा किलर' भी कहा जा रहा है क्योंकि यह लोकप्रिय दक्षिण कोरियाई मॉडल्स क्रेटा और सेल्टोस को टक्कर देने के लिए तैयार की गई है। पहले खबरें थीं कि मारुति की अगली एसयूवी तीन-रो वाली होगी, जो टाटा सफारी, एमजी हेक्टर प्लस और महिंद्रा एक्सयूवी 700 से टक्कर देगी। लेकिन अब कंपनी ने रणनीति बदली है और 5-सीटर सेगमेंट पर फोकस कर रही है। एस्कुडो ग्रैंड विटारा से लंबी होगी, लेकिन कीमत में अधिक किफायती रहने की उम्मीद है। यह नई एसयूवी पेट्रोल, स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड और सीएनजी जैसे पावरट्रेन विकल्पों के साथ आएगी। अतिरिक्त लंबाई के कारण इसमें ट्विन सीएनजी टैंक फिट हो सकेंगे, जिससे बूट स्पेस भी बेहतर होगा।

हवाई में फलीट ऑटो शॉ में लोग जेइको जे8 वाहन को देखते हुए, इस ऑटो शो में कई कंपनियों ने अपने नये कमर्सियल और फलीट वाहन पेश किये।

केंद्र सरकार दो बैंकों के एमडी और सीईओ का बढ़ा सकती है कार्यकाल

नई दिल्ली, (ए.)। केंद्र सरकार जल्द ही पंजाब एंड सिंध बैंक और इंडियन ओवरसीज बैंक (आईओबी) के मैनेजिंग डायरेक्टर और चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर की टर्म को बढ़ा सकती है। मीडिया रिपोर्ट में एक सीनियर अधिकारी के हवाले से बताया गया है कि दोनों बैंकों के टॉप अफसरों की सर्विस एक्सटेंशन करीब फाइनल स्टेज में है। पंजाब एंड सिंध बैंक के एमडी और सीईओ स्वरूप कुमार साहा का मौजूदा टर्म 2 जून को खत्म हो रहा है, जबकि आईओबी के अजय कुमार श्रीवास्तव का टर्म 31 दिसंबर को खत्म होगा। रिपोर्ट में सरकारी सूत्र के हवाले से बताया कि दोनों के पास करीब दो साल की सर्विस बाकी है। उनके कार्यकाल को एक्सटेंड करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है और फाइनल नोटिफिकेशन जल्द जारी होगा। स्वरूप कुमार साहा ने 3 जून 2022 को पंजाब एंड सिंध बैंक के एमडी और सीईओ के रूप में चार्ज लिया था। इससे पहले वह पंजाब नेशनल बैंक में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर थे। साहा ने अपनी बैंकिंग जर्नी 1990 में ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स से शुरू की थी।

सोने और चांदी की कीमतों में उछाल

नई दिल्ली, (ए.)। घरेलू बाजार में बुधवार को सोने और चांदी की कीमतों में उछाल आया है। इनके वायदा भाव में भी आज तेजी रही। दोनों के वायदा भाव आज बढ़त के साथ खुले। घरेलू बाजार में आज सोने के भाव 95,450 रुपये जबकि चांदी के भाव 97,500 रुपये के करीब रहे। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने और चांदी के वायदा भाव में तेजी रही।

सोने के वायदा भाव की शुरुआत आज सुबह तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एक्सचेंज) पर आज सुबह सोने का बेंचमार्क जून अनुबंध 503 रुपये के उछाल के साथ ही 95,344 रुपये के भाव पर खुला। वहीं इसका पिछला बंद भाव 94,841 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 610 रुपये की तेजी के साथ 95,451 रुपये के भाव पर बना हुआ था। ये 95,526 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 94,344 रुपये के भाव पर दिन के निचले स्तर पर पहुंचा। सोने के वायदा भाव ने पिछले महीने 99,358 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर हासिल किया था।

वहीं चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मई

अनुबंध आज 159 रुपये बढ़कर97,447 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 97,288 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 248 रुपये की तेजी के साथ 97,536 रुपये के भाव पर कामकाज कर रहा था। ये 97,644 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 97,447 रुपये के भाव पर दिन के निचले स्तर पर पहुंचा। वहीं चांदी के वायदा भाव 1,01,999 रुपये किलो के भाव पर शीर्ष स्तर पर पहुंचे।

दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज सोने और चांदी के वायदा भाव के भाव में तेजी रही है। कामेक्स पर सोना 3,293 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 3,284.60 डॉलर प्रति औंस था। एक समय ये 24.10 डॉलर की तेजी के साथ 3,308.70 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव पिछले महीने 3,509.90 डॉलर के भाव पर पहुंचे थे। वहीं कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 33.27 डॉलर के भाव पर खुले, इसक पिछला बंद भाव 33.17 डॉलर था।

जेमिनी एप ने 400 मिलियन से अधिक मासिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं का आंकड़ा छू लिया: पिचाई

मुंबई, (ए.)। गूगल और उसकी पैरेंट कंपनी अल्फाबेट के सीईओ सुंदर पिचाई ने बताया कि जेमिनी एप ने 400 मिलियन से

अधिक मासिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं का आंकड़ा छू लिया है। उन्होंने बताया कि विशेष रूप से एआई मॉडल की 2.5 सीरीज को लेकर उल्लेखनीय वृद्धि और उपयोगकर्ता जुड़ाव साफ दिख रहा है। इस तेजी से बढ़ती लोकप्रियता को कंपनी की एआई रणनीति की सफलता के रूप में देखा जा रहा है। पिचाई ने कहा कि सात मिलियन से अधिक डेवलपर्स जेमिनी के साथ काम कर रहे हैं, जो बीते साल की तुलना में पांच गुना अधिक है और वर्टेक्स एआई पर जेमिनी का इस्तेमाल 40 गुना बढ़ गया है। उन्होंने बताया, जेमिनी एप में 2.5 प्रो का इस्तेमाल करने वालों को लेकर उपयोग में 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पिचाई ने कहा, पिछले साल इस समय हम अपने प्रोडक्ट्स और एपीआई में प्रति माह 9.7 ट्रिलियन टोकन प्रॉसेस कर रहे थे। अब, हम 480 ट्रिलियन से अधिक टोकन प्रॉसेस कर रहे हैं, जो कि 50 गुना अधिक है। उन्होंने कहा, इस प्रगति का मतलब है कि हम एआई प्लेटफॉर्म शिफ्ट के एक नए फेज में हैं, जहां दशकों से की जा रही रिसर्च दुनिया भर के लोगों, व्यवसायों और कम्युनिटीज के लिए हकीकत बन रही है।

बीते साल लांच होने के बाद से एआई ओवरव्यूज 1.5 बिलियन से ज्यादा यूजर्स तक पहुंच गया है और अब 200 देशों और क्षेत्रों में है। गूगल सीईओ पिचाई ने बताया, गूगल के एआई ओवरव्यूज अमेरिका और भारत जैसे बड़े बाजारों में 10 प्रतिशत से अधिक वृद्धि कर रहे हैं। यह वृद्धि समय के साथ और बढ़ने की उम्मीद है। गूगल ने एआई मोड के रूप में सर्च अनुभव को पूरी तरह नया रूप देने की घोषणा की है। यह मोड अधिक उन्नत तर्क क्षमता प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता लंबे और जटिल प्रश्न पूछ सकते हैं। शुरुआती परीक्षणों में पाया गया कि उपयोगकर्ता पारंपरिक सर्च की तुलना में 2 से 3 गुना लंबे सवाल कर रहे हैं। पिचाई ने कहा, मुझे ये बताकर खुशी हो रही है कि एआई मोड की सुविधा अमेरिका में सभी यूजर्स के लिए शुरू हो चुकी है।

मैनचेस्टर में प्रीमियर लीग फुटबॉल में खेलते हुए खिलाड़ी।

आकाश चोपड़ा बोले, जडेजा सहित सात क्रिकेटरों को बाहर करे सीएसके

नई दिल्ली, (ए.)। आईपीएल के इस सत्र में पांच बार की खिताब विजेता चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की टीम का प्रदर्शन बेहद खराब रहा है और वह लीग स्तर पर ही बाहर होने वाली पहली टीम बनी। इसी के बाद से ही सीएसके में शामिल अनुभवी खिलाड़ियों को टीम में रखने पर सवाल उठे हैं। इसी मामले में पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि सीएसके प्रबंधन को टीम में बड़े बदलाव करते हुए कम से कम सात खिलाड़ियों को बाहर करना होगा। आकाश के अनुसार सीएसके को रविंद्र जडेजा, आर अश्विन, रचिन रविंद्र जैसे खिलाड़ियों को हटाना होगा। सीएसके को लीग स्तर पर अपने अंतिम मैच में राजस्थान रॉयल्स से हार का सामना करना पड़ा जिससे वह अंतिम स्थान पर पहुंच गयी है। इसी को लेकर आकाश चोपड़ा ने कहा कि सीएसके प्रबंधन को अब गंभीर होकर नये सिरे से टीम तैयार करनी होगी। इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा, मैं अश्विन, जडेजा, रचिन रविंद्र, डेवोन कॉनवे, विजय शंकर, दीपक हुड्डा, राहुल त्रिपाठी को रिलीज करना चाहूंगा। इन खिलाड़ियों की सूची में 43 साल के हो रहे कप्तान महेंद्र सिंह धोनी का नाम नहीं है। वहीं पूर्व क्रिकेटर और कमेंटेटर संजय बांगर का मानना है।

केकेआर ने अंतिम समय पर नियम बदले जाने पर सवाल उठाये

मुम्बई, (ए.)। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने आईपीएल के 18 वें सत्र से बाहर होने के बाद मैच की टाइमिंग वाले नियम में बदलाव पर सवाल उठाये हैं। केकेआर प्रबंधन को कहाना है कि इससे उसने नुकसान पहुंचा है और वह प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गयी। केकेआर ने इस मामले में अपनी नाराजगी भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) से भी जाहिर की है। उसका कहना है कि बीसीसीआई ने प्लेइंग कंडीशन्स में एक बदलाव करते हुए मैच को पूरा करने के लिए अतिरिक्त 60 मिनट दिए।

एक रिपोर्ट के अनुसार केकेआर ने बीसीसीआई को पत्र लिखकर इसी बदलाव की आलोचना की है। आईपीएल के सीओओ हेमांग अमीन को लिखे ई मेल में कोलकाता नाइट राइडर्स के सीईओ वेंकी मैसूर ने कहा, अगर में सत्र के बीच में बदलाव जरुरी थे तो वे पहले किये जा सकते थे।

वेंकी का कहना था कि अगर ऐसा विस्तार पहले किया गया होता, तो 17 मई को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के खिलाफ उनका मैच बारिश के कारण रद्द नहीं होता। उन्हें लगता है

कि अतिरिक्त समय की वजह से पांच ओवर का खेल हो सकता था। केकेआर ने सीईओ ने कहा, जब आईपीएल दोबारा शुरु हुआ तो 17 मई को केकेआर और आरसीबी मैच में सभी को बारिश का अंदेशा था। उन्होंने कहा कि अब लागू किए जा रहे अतिरिक्त 120 मिनट कम से कम 5 ओवर के खेल का मौका भी हमने खो दिया।

बारिश के कारण मैच रद्द होने की वजह से केकेआर की टीम मुकाबले से बाहर हो गई। फिलहाल वे 13 मैचों में 12 अंकों के साथ छठे स्थान पर हैं और वे अधिकतम 14 अंक तक पहुंच सकते हैं। इस सत्र उनके दो मैच बारिश के कारण रद्द हुए हैं। मैसूर ने आगे कहा, बारिश के कारण केकेआर के प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना समाप्त हो गई। साथ ही कहा कि इस तरह के अचानक लिए फैसले और उन्हें लागू करने में एकरुपता की कमी इस स्तर के टूर्नामेंट के लिए सहित नहीं है। मुझे भरोसा है कि आप भी समझते होंगे कि हम क्यों दुखी हैं। सिर्फ केकेआर ही नहीं, बल्कि कुछ अन्य टीमें भी इस नियम के लागू होने से खुश नहीं हैं क्योंकि नियमों में ये बदलाव उस समय हुआ, जब 70 में से 62 लीग मैच खेले जा चुके थे।

रॉयल्स और सीएसके के नाम दर्ज हुआ ये अनचाहा रिकार्ड

मुम्बई, (ए.)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल में इस बार दो टीमें लीग स्तर पर दस-दस मैच हारीं हैं। ये टीम हैं राजस्थान रॉयल्स और चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके)। ये पहली बार है जब रॉयल्स 10 मैच हारी है। वह इस बार 14 मैचों में से केवल 4 में जीती है। रॉयल्स अंक तालिका में नौवें स्थान पर है। वहीं पांच बार की विजेता सीएसके दूसरी बार दस मैच हारी है। सीएसके इससे पहले साल 2022 में भी 10 मैच हारी थी। वहीं आईपीएल इतिहास की बात करें तो इससे पहले भी सात टीमें दस-दस मैच हारी हैं। ये टीमें हैं। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर), रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी), मुंबई इंडियंस (एमआई), पुणे वॉरियर्स, डेक्कन चार्जर्स, दिल्ली कैपिटल्स और सनराइजर्स हैदराबाद। वहीं पंजाब किंग्स की टीम आज तक तीन बार लीग स्तर पर साल 2010 , 2015 और 2016 में दस-दस मैच हारी है।।

विराट अपने आक्रामक अंदाज से विरोधी टीमों पर दबाव बनाते हैं: शास्त्री

नई दिल्ली, (ए.)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह अपने खेल और आक्रामक अंदाज से विरोध टीमों पर दबाव बना देते थे। शास्त्री जब भारतीय टीम के कोच थे। उसी दौरान विराट टीम के कप्तान थे। इस जोड़ी को मिलकर भारतीय क्रिकेट को आक्रामक और विजेता इकाई में बदलने के लिए जाना जाता है। शास्त्री ने कहा कि कोहली के काम करने का अंदाज उन्हें विश्व का सबसे फिट खिलाड़ी बनाता है। अपने जुनून से उन्होंनें भारतीय टीम को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टीम में बदला है। वह मैदान पर केवल खेलने नहीं, बल्कि विरोधी टीम पर हावी होने और अपनी अगल शैली से भारतीय क्रिकेट के सबसे विशेष कप्तान बनने

के लिए उतरते थे।

कोहली हमेशा अपनी टीम के साथियों ही नहीं विरोधी टीम के खिलाड़ियों को सलाह देने के लिए भी हमेशा तैयार रहे थे। शास्त्री ने कहा कि कई बार उन्होंने दूसरी टीमो के खिलाड़ियों को भी विराट के पास आते देखा है। विपक्षी खिलाड़ी भी कोहली से सलाह लेने आते थे, और कोहली उत्साह से उनकी मदद करते थे।

शास्त्री ने कहा कि विराट की कार्यशैली का भारतीय टीम पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। इसी कारण वह भारतीय टीम को विश्व क्रिकेट की सबसे फिट और शानदार प्रदर्शन करने वाली टीम में बदलने में सफल रहे। वह विरोध टीमों के लिए डर का नाम थे पर अपने साथियों के लिए दोस्त और मार्गदर्शक। मैंने विपक्षी खिलाड़ियों को उनसे सलाह लेते देखा और विराट हमेशा मदद को तैयार रहते थे। मैंने उन्हें बेहतरीन बल्ले गिफ्ट करते देखा, क्योंकि वह असुरक्षित प्रतिस्पर्धी नहीं थे।

शास्त्री का मानना है कि खिलाड़ियों की तुलना नहीं की जानी चाहिये। वह गावस्कर और तेंदुलकर के साथ भी ड्रेसिंग रूम साझा किया पर उन्हें विराट में कुछ अलग नजर आया। उन्होंने कहा कि मुझे तुलना पसंद नहीं। मैंने गावस्कर और तेंदुलकर के बारे में सवाल सुने। मैं उनके साथ खेला हूं पर कोहली को मैंने अलग रुख से देखा है। वह क्रिकेट खेलने नहीं बल्कि खेल और मैदान पर नियंत्रण करने के इरादे से उतरते थे।

ऋषभ का वापसी करना तय: मार्श

नई दिल्ली, (ए.)। लखनऊ सुपर जाइंट्स के बल्लेबाज ऑस्ट्रेलिया के मिचेल मार्श ने माना है कि उनकी टीम के कप्तान ऋषभ पंत इस सत्र में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये। मार्श के अनुसार कभी-कभी क्रिकेट में ऐसा भी होता है। ऋषभ इस सत्र के 12 मैचों में केवल 135 रन ही बना पाये हालांकि मार्श का मानना है कि वह ये बात स्वीकार करने वाले पहले व्यक्ति होंगे कि उनका प्रदर्शन खराब था। यह साल 2016 में पदार्पण करने के बाद से उनका आईपीएल में अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन रहा है। मार्श को उम्मीद है कि ऋषभ सुपरजाइंट्स के आखिरी दो मैच में अच्छा प्रदर्शन करेंगे, हालांकि ये केवल औपचारिक मुकाबले होंगे। उन्होंने कहा, 'हम सभी जानते हैं कि वह एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं, इसलिए उसका वापसी करना तय है।' मार्श ने कहा कि 14वें लीग मैच के खत्म होने के बाद सभी के प्रदर्शन की जांच की जा सकती है। मार्श ने कहा, 'मुझे लगता है कि शायद इस सत्र के बाद आत्मचिंतन का समय आएगा। मेरा ध्यान बस अपनी टीम और अपनी फ्रेंचाइजी के लिए अगले दो मैच जीतने के प्रयास करना है। साथ ही कहा कि आईपीएल एक बहुत बड़ा टूर्नामेंट है और इसमें जीत का अंतर बहुत कम होता है।' उन्होंने कहा, 'हमने पूरे सत्र में कुछ करीबी मैच गंवाए इसी कारण हम प्लेऑफ के लिए भी जगह नहीं बना पाये हैं पर हमारा प्रयास है कि हम जितना संभव हो सके इस सत्र को जीत के साथ समाप्त करें।'

गोरखपुर में बनेगा अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम

लखनऊ, (ए.)। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम बनने जा रहा है। राज्य सरकार खेलों को प्रौत्साहन देने के तहत ही 236 करोड़ रुपये में राज्य का चौथा अंतरराष्ट्रीयल क्रिकेट स्टेडियम बनाने जा रही है। ये स्टेडियम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) मानकों के अनुसार बनेगा। इसमें सात मुख्य पिच व चार अभ्यास पिच होंगी और इसकी क्षमता 30 हजार दर्शकों की होगी। प्रदेश में फिलहाल कानपुर व लखनऊ के स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों का आयोजन होता है, वहीं वाराणसी में भी एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बन रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 'ड्रीम प्रोजेक्ट्स' में शामिल गोरखपुर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण व विकास कार्यों को भी जमीन पर उतारने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

नियोजन विभाग द्वारा इस विषय में एक विस्तृत खाका तैयार किया गया है। कार्ययोजना के अनुसार, गोरखपुर के ताल नदौर में 236.40 करोड़ रुपये खर्च कर 50 एकड़ भूमि पर 18 महीनों में निर्माण व विकास कार्यों को पूरा किया जाएगा। गोरखपुर में बनने वाले इस अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम के मुख्य परिसर का निर्माण 45 एकड़ में होगा जबकि पांच एकड़ में अन्य सुविधाओं का विकास होगा।

पुतिन के सामने ट्रंप ने भी मानी हार, रूस और यूक्रेन के बीच जंग रुकवाना उनके बस की बात नहीं

वाशिंगटन, (ए.)। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध को लेकर अमेरिकी भूमिका पर एक बड़ा मोड़ सामने आया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से दो घंटे की फोन वार्ता में अपनी उस पुरानी मांग को छोड़ दिया, जिसमें उन्होंने 30 दिनों के बिना शर्त युद्धविराम की बात की थी। यह घटनाक्रम यूक्रेन और ईयू के देशों के लिए एक बड़ा झटका है, जिन्होंने महीनों तक ट्रंप को अपने पक्ष में करने की कोशिश की थी।

यूक्रेन ने ट्रंप के युद्धविराम प्रस्ताव का समर्थन किया था, लेकिन रूस ने ट्रंप के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था। अब ट्रंप ने संकेत भी दे दिया है कि युद्ध को समाप्त करना अब उनके नियंत्रण से बाहर है। एक यूरोपीय राजनयिक ने निराशा जाहिर करते हुए कहा, ट्रंप यूरोपीय नेताओं से बातचीत में युद्धविराम पर सहमत हुए थे, लेकिन सोमवार को पुतिन से बात करते ही पलट गए। उन पर एक दिन से ज्यादा भरोसा नहीं किया जा सकता।

कुछ हफ्ते पहले तक ट्रंप ने रूस पर सख्त प्रतिबंधों की चेतावनी दी थी, इससे कुछ उम्मीद जगी थी कि पुतिन वार्ता की ओर बढ़ सकते है। लेकिन उनकी नीति अब बदल गई है। पुतिन ने कहा है कि रूस यूक्रेन के साथ एक शांति समझौते पर बातचीत करने को तैयार है, लेकिन यह युद्धक्षेत्र की सच्चाई पर आधारित होनी चाहिए।

जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस ने कहा, पुतिन स्पष्ट रूप से समय खींचने की रणनीति अपना रहे हैं। वह वास्तव में शांति में रुचि नहीं रखते। चैथम हाउस (लंदन) की विशेषज्ञ ओरिसिया लुत्सेविच ने कहा कि रूस के लिए युद्ध और कूटनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने कहा, पुतिन कूटनीतिक देरी का उपयोग युद्ध में बढ़त पाने के लिए करते हैं।

यूक्रेन अब तक अमेरिका से अरबों डॉलर की सैन्य सहायता और रियल-टाइम खुफिया जानकारी पर निर्भर रहा है। लेकिन बाइडेन प्रशासन से मिली सहायता कुछ ही दिनों में खत्म हो जाएगी। वहीं, ट्रंप सरकार की नीति अस्पष्ट है।

विशेष खबरें

फ्रांस में जारी कान्स फिल्म समारोह में रेड कारपेट पर अपनी अदाएं बिखेरती हुई बॉलीवुड अभिनेत्री जहांनवी कपूर।

पाकिस्तान में नहर बनाने के खिलाफ प्रदर्शनकारियों ने गृहमंत्री का घर फूंका

इस्लामाबाद, (ए.)। पाकिस्तान में प्रदर्शनकारियों ने सिंध प्रांत के गृह मंत्री जियाउल हसन लंजर के घर को आग के हवाले कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने घर की सुरक्षा में तैनात गार्ड्स को भी पीटा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सिंध के नौशेहरो फिरोज जिले में मंगलवार को पुलिस और एक राष्ट्रवादी संगठन के कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। इसमें कम से कम 2 लोगों की मौत हो गई। दोनों तरफ के कई लोग घायल भी हुए पुलिस और राष्ट्रवादी संगठन के कार्यकर्ताओं के बीच हुई थी झड़प हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान सरकार की योजना सिंध नदी पर नहर बनाने की है। इससे स्थानीय लोग नाराज हैं। उनका कहना है कि सरकार उनकी जमीन और पानी छीन रही है। जब प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर धरना देने की कोशिश की, तो पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की। इससे तनाव बढ़ गया। नाराज होकर लोगों ने सिंध के गृह मंत्री के घर हमला कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने कुछ ट्रकों को लूट लिया और उनमें से कुछ को आग के हवाले कर दिया।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सरकार की योजना सिंध नदीं पर नहरें बनाकर चोलिस्तान में हजारों एकड़ बंजर जमीन पर खेती करने की है। इसकी लागत करीब 211 अरब रुपए है। हालांकि बिलावल भुट्टो की पार्टी पीपीपी इसके खिलाफ है। उनका कहना है कि सिंध को इससे नुकसान होगा और उनका पानी छीन लिया जाएगा। कुछ हफ्ते पहले एक समिति ने भी इस प्रोजेक्ट को खारिज कर दिया था। उनका कहना था कि जब तक सभी राज्यों में आपसी सहमति नहीं बनेग, तब तक कोई नई नहर नहीं बनेगी। इसके बावजूद सिंध में विरोध प्रदर्शन जारी हैं। बता दें मंगलवार को जब प्रदर्शनकारियों ने हाईवे पर धरना देने की कोशिश की तो पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए लाठीचार्ज किया। जवाब में लोगों ने पत्थर फेंके। इस झड़प में एक पुलिस अधिकारी और दो पुलिसकर्मी घायल हो गए, जबकि पांच प्रदर्शनकारियों को भी चोटें आईं। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

गाजा में इजरायल की ओर से आते हुए सैन्य वाहन।

हाफिज सईद का राइट हैंड आतंकी हमजा को गोली मारी, गंभीर हालत में भर्ती

लाहौर, (ए.)। आतंकी हाफिज सईद का खासमखास आमिर हमजा को अज्ञात लोगों ने गोली मार दी। उसे गंभीर हालत में यहां के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आमिर हमजा कोई ऐरा-गैरा आतंकी नहीं है। वह लश्कर चीफ हाफिज सईद का राइट हैंड है। उससे भी अधिक वह लश्कर-ए-तैयबा का को-फाउंडर भी है। आतंकी आमिर हमजा रहस्यमयी परिस्थितियों में बुरी तरह घायल है। उसके शरीर पर चोटों के निशान हैं। लाहौर के अस्पताल में वह मौत की भीख मांग रहा है। उसकी हालत बहुत खराब है और कभी भी उसके सासों की डोरी टूट सकती है।

आमिर हमजा ने हाफिज सईद के साथ मिलकर लश्कर को भारत के खिलाफ खड़ा किया। हमजा का आतंकी सफर 1980 के दशक से शुरू हुआ। उसने आतंकी हाफिज सईद और अब्दुल रहमान मक्की के साथ मिलकर लश्कर-ए-तैयबा की नींव रखी थी। मकसद भारत में आतंक फैलाना और जम्मू-कश्मीर में अशांति फैलाना था। हमजा की क्राइम कुंडली की बात करे तो उसका सबसे बड़ा गुनाह यही है कि उसने मुंबई हमलों को अंजाम दिया। वह मुंबई हमलों के अलावा, जम्मू-कश्मीर में हुए कई आतंकी हमलों का मास्टरमाइंड रहा है।

अब हमजा और हाफिज के बीच खटपट

दरअसल, साल 2018 में आमिर हमजा और हाफिज सईद के बीच आतंकी संगठन लश्कर के लिए उगाही करने वाले फंड को लेकर मनमुटाव हो गया था। तब इंटरनेशनल प्रेशर में पाकिस्तानी सरकार ने इस संगठन के फंड लेने पर रोक लगा दी थी। तब आतंकी हमजा का मानना था कि हाफिज सईद ने इस मामले में पाकिस्तान सरकार पर दबाव नहीं डाला, वरना इस संगठन के चंदा लेने पर रोक नहीं लगती। उसके बाद आतंकी हमजा ने एक अलग संगठन जैश-ए-मनक्फा बनाया, जो फंड उगाने का काम करता था।

कई हमलों में शामिल रहा हमजा

मुंबई अटैक के वक्त हमजा लश्कर का ऑपरेशनल कमांडर था। बीते साल जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में शिव खोरी मंदिर से लौट रहे तीर्थयात्रियों की बस पर हमले में भी इसकी बड़ी भूमिका थी।

बलूचिस्तान में स्कूल बस पर आत्मघाती हमला, 4 बच्चों की मौत, 38 घायल

पेशावर, (ए.)। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में एक दर्दनाक आतंकी हमला हुआ, जब एक स्कूल बस को आत्मघाती कार बम से निशाना बनाया गया। इस हमले में कम से कम चार बच्चों की मौत हो गई और 38 अन्य घायल हो गए हैं। स्थानीय प्रशासन के मुताबिक, यह हमला दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान क्षेत्र में उस समय हुआ, जब एक स्कूल बस बच्चों को लेकर स्कूल की ओर जा रही थी। आत्मघाती हमलावर ने तेज रफ्तार कार से बस को टक्कर मार दी, जिससे जोरदार विस्फोट हुआ। प्रांतीय अधिकारी ने पुष्टि की है कि घायलों में अधिकांश बच्चे हैं, जिन्हें पास के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटनास्थल पर सुरक्षा बल और बचाव टीमें तुरंत पहुंच गईं और इलाके को सील कर दिया गया है। हमले की जिम्मेदारी अभी तक किसी आतंकी संगठन ने नहीं ली है, लेकिन बलूचिस्तान में लंबे समय से सक्रिय उग्रवादी संगठनों और अलगाववादी समूहों पर संदेह जताया जा रहा है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने इस कायराना हमले की निंदा की है और दोषियों को जल्द पकड़ने का आश्वासन दिया है। बलूचिस्तान में पिछले कुछ महीनों में आतंकी हमलों में तेजी आई है, जिससे आम लोगों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

पुतिन ने किया कुर्स्क क्षेत्र का दौरा, कहा- अब ये फिर से हमारा

-जेलेंस्की बोले- यूक्रेनी सेना अब भी वहां मौजूद, लड़ाई जारी है

मास्को, (ए.)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कुर्स्क शहर का दौरा किया। पुतिन ने कुर्स्क के नेताओं से मुलाकात की और यहां बन रहे बिजली घर का भी जायजा लिया। बता दें कुर्स्क वही जगह है जहां पिछले साल अगस्त में यूक्रेन की सेना ने हमला किया था और 1100 वर्ग किमी इलाके पर कब्जा कर लिया था। यह हमला इसलिए खास था, क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार किसी विदेशी सेना ने रूस की जमीन पर हमला किया था।

पुतिन ने दौरा कर कहा कि अब इस जमीन पर फिर से रूस का कब्जा है। उन्होंने यहां पर बारूदी सुरंगें हटाने के लिए और सैनिक भेजने का आदेश दिया, ताकि लोग अपने घर वापस लौट सकें। वहीं यूक्रेन का कहना है कि उसकी सेना अब भी उस इलाके में मौजूद है और लड़ाई जारी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि उनकी सेना कुर्स्क और बेलगोरोड जैसे इलाकों में रूस के खिलाफ लड़ रही है।

रूस ने सुखोई एसयू-57एम फाइटर जेट का किया परीक्षण, एआई की मिली ताकत

मास्को, (ए.)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में कई आतंकी ठिकानों पर सटीक निशाना साधा था। इस दौरान भारत के सुखोई एसयू-30एमकेआई विमानों ने एक बार फिर अपनी उपयोगिता साबित कर दी। अब रूस ने इस विमान का नया वर्जन लॉन्च किया है। रूस ने हाल ही में सुखोई एसयू-57एम फाइटर जेट के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-असिस्टेड वर्जन का सफल परीक्षण किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक रूस ने एसयू-57एम की पहली एआई-एसिस्टेड फ्लाइट को एक प्रोटोटाइप के रूप में तैयार किया है। जानकार इस प्रयोग को रूस के एयरोस्पेस इतिहास में मील का पत्थर बता रहे हैं। रूस की टेस्टिंग के दौरान एक पायलट कॉकपिट में मौजूद था। हालांकि फाइटर जेट की फ्लाइट कंट्रोल, नेविगेशन और टारगेट चुनने की क्षमता जैसी चीजें एआई की मदद से ही नियंत्रित की गई। मीडिया रिपोर्ट में विशेषज्ञों के हवाले से बताया कि एआई की मदद से पायलट तेजी से फैसले ले सकेंगे। वहीं यह पायलट के भार को कम करने और हाइ रिस्क वाले फैसले लेने में भी मदद करेगा। रक्षा विश्लेषकों के मुताबिक यह तकनीक जल्द ही आसमानी वारफेयर का अहम हिस्सा हो सकती है। बता दें कि रूस 1999 से ही पीएके एफए नाम का कार्यक्रम चला था है जो एआई इंटीग्रेशन के क्षेत्र में काम कर रहा है। इस प्रोजेक्ट का मकसद पांचवीं पीढ़ी के फाइटर्स को तैयार करना था। एसयू-57एम, एसयू-57 का एक बेटर वर्जन है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह मॉडल अमेरिका के एफ-22 रैप्टर और एफ-35 लाइटनिंग-2 जैसे जेट को सीधी टक्कर दे सकता है। बता दें कि सुखोई जेट्स भारतीय वायुसेना के बेड़े का सबसे अहम हिस्सा हैं।

मलेशिया में इंटरनेशनल मैरीटाइम व एयरोस्पेस एक्सहीबिशन में बमबारी दिखायी गयी। इसमें रक्षा क्षेत्र से जुड़ी दुनिया भर की कंपनियों ने भाग लिया।

चावल पर टिप्पणी से दुखी कृषि मंत्री ने दिया इस्तीफा, अब सरकार पर संकट

टोक्यो, (ए.)। जापान के कृषि मंत्री ने चावल को लेकर एक टिप्पणी कर दी। इसका विरोध पूरे देश में हुआ। इससे वे इतने व्यथित हो गए कि उन्होंने प्रायश्चित करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। जापान के उस कृषि मंत्री का नाम है तकु एतो। उन्होंने जनता की नाराजगी को देखते हुए अपना इस्तीफा दे दिया। तकु एतो ने बताया कि जापानी प्राइम मिनिस्टर शिगेरु इशिबा ने उनका इस्तीफा स्कीकार कर लिया है। अब आपके मन में सवाल होगा कि आखिर वह टिप्पणी क्या थी, जिसके कारण कृषि मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा? दरअसल, जापान में अभी महंगाई चरम पर है। ऐसे माहौल में चावल पर दिया बयान ही मंत्री जी के लिए जी का जंजाल बन गया। उन्होंने कहा था कि उन्हें अपने समर्थकों की ओर से दिए गए तोहफों की वजह से कभी चावल नहीं खरीदना पड़ा। उनके इसी बयान पर उस समय बवाल मच गया जब देश में चावल की कमी और आसमान छूती कीमतों से उपभोक्ता जूझ रहे हैं।

अपनी मुस्कान से लोगों को गुदगुदाने वाले कॉमेडियन जॉर्ज वेंडट का निधन

लॉस एंजिल्स, (ए.)। चेयर्स जैसे आइकॉनिक शो में अपनी बेमिसाल कॉमिक टाइमिंग और दिल जीत लेने वाली मुस्कान से लोगों को गुदगुदाने वाले अभिनेता जॉर्ज वेंडट का निधन हो गया है। उन्होंने अपने करियर में लाखों दिलों को जीता, लेकिन अब वो इस दुनिया को अलविदा कह गए। वेंडट के निधन की जानकारी उनकी पब्लिसिस्ट मेलिसा नाथन ने दी। उन्होंने बताया कि 76 साल के जॉर्ज वेंडट ने लॉस एंजिल्स स्थित अपने घर में मंगलवार सुबह अंतिम सांस ली। उनके परिवार ने भी इस खबर की पुष्टि की है। अभिनेता का जाना केवल हॉलीवुड ही नहीं, बल्कि हर उस इंसान के लिए सदमा है जो उनकी कॉमेडी का दीवाना था।

नाथन ने कहा कि जॉर्ज वेंडट न केवल एक बेहतरीन अभिनेता थे, बल्कि एक गहरे भावुक और पारिवारिक इंसान भी थे। जो कोई भी उन्हें जानता था, वो उनके जज्बे और गर्मजोशी से परिचित था। उनकी जगह कभी नहीं भर पाएगी। जॉर्ज का सबसे यादगार किरदार एनबीसी के मशहूर सिटकॉम चेयर्स में नॉर्म पीटरसन का, जो बीयर के शौकीन एक प्यारे से अकाउंटेंट की भूमिका थी।

इस किरदार ने उन्हें लगातार छह बार एमी अवॉर्ड नॉमिनेशन दिलाया और उन्होंने टीवी इतिहास में अपनी एक अमिट छाप छोड़ी। दर्शकों के दिलों में नॉर्म के रूप में उनकी छवि आज भी ताज़ा है। शिकागो से अपना करियर शुरू करने वाले जॉर्ज ने 1970 के दशक में मंच और टेलीविज़न पर कई यादगार भूमिकाएं निभाई।

कान फिल्म फेस्टिवल में सुर्खियां बटोर रहा रुचि गुज्जर लुक

पीएम मोदी की फोटो वाला नेकलेस सबसे ज्यादा लाइमलाइट में

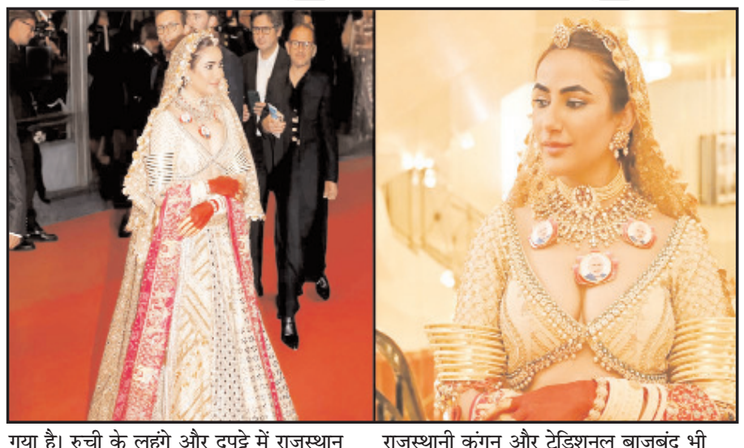

पेरिस, (ए.)। कान फिल्म फेस्टिवल 2025 से लगातार इंडियन सेलिब्रेटी के लुक सामने आ रहे हैं। हाला ही में अभिनेत्री रुचि गुज्जर का लहंगा लुक सामने आया है, उनके लुक को लोग देखते ही रह गए। कान 2025 के लिए रुची ने राजस्थानी लहंगे को कैरी किया। लुक में सबसे खास है उनका पीएम मोदी की फोटो वाला नेकलेस।

रुची ने कान 2025 रेड कार्पेट के लिए गोल्डन कलर का लहंगा पहना है। इस रूपा शर्मा ने डिजाइन किया है। अभिनेत्री के लहंगे पर बारीक शीशे का काम किया गया है। इसके अलावा लहंगे को पारंपरिक गोटा पट्टी और खूबसूरत मोती की कढ़ाई की गई है। रुची ने सिर पर गोल्डन कलर के दुपट्टे को ओढ़ा है, जिसे शीशों की बूटियों से सजाया गया है। इसके अलावा दुपट्टे के बॉर्डर पर गोल्डन लेस लगी है।

राजस्थान के ट्रेडिशनल लहंगे को रुची ने डीप प्लंजिंग नेकलाइन ब्लाउज के साथ पूरा किया। जिस पर बारीकी से जरदोजी वर्क किया गया है। रुची के लहंगे और दुपट्टे में राजस्थान की शाही कलात्मकता झलक दिख रही है। लुक में उन्होंने दो दुपट्टों को कैरी किया है एक हाथों में है जो गुलाबी रंग का है। हाथ से बुना गया ये बांधनी दुपट्टा काफी सुंदर दिख रहा है।

रुची ने राजस्थानी लहंगे के साथ ट्रेडिशनल जूलरी को कैरी किया। जिसमें उन्होंने माथा पट्टी के साथ बोड़ला लगाया है। इसके अलावा राजस्थानी कंगन और ट्रेडिशनल बाजूबंद भी पहना है।

लुक को पूरा करने के लिए अभिनेत्री ने हाथों पर आलता भी लगाया है। रुची का कान रेड कार्पेट लुक खूब लाइमलाइट बटोर रहा है। दरअसल, उनके स्टेटमेंट हार से कमल के फूल को अटैच किया है और उन फूलों पर पीएम मोदी की तस्वीर लगी है।

स्पेन में संचार सेवाएं और आपातकालीन सेवा भी ठप, लोग हो रहे परेशान

यह संकट चार हफ्ते पहले हुए ब्लैकआउट के बाद सामने आया

मैड्रिड, (ए.)। स्पेन में एक बार फिर संचार सेवाएं ठप हो गई हैं। जानकारी के मुताबिक सोमवार सुबह करीब पांच बजे से देशभर में मोबाइल नेटवर्क, इंटरनेट और लैंडलाइन सेवाओं ने काम करना बंद कर दिया है। यह संकट ठीक चार हफ्ते पहले हुए बड़े ब्लैकआउट के बाद सामने आया है। इस बार देश के करीब सभी बड़े नेटवर्क जैसे मोविस्टार, ऑरेंज, वोडाफोन, डिजीमोबिल और ओ2 पर असर पड़ा है। इससे देश के करोड़ों लोग प्रभावित हुए हैं और संचार व्यवस्था चरमरा गई है।

चिंता की बात यह है कि कई इलाकों में आपातकालीन सेवा 112 भी बंद हो गई है, जिससे लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं और गंभीर हो गई हैं। यह नेटवर्क आउटेज स्पेन के करीब सभी प्रमुख शहरों में फैला है। मैड्रिड, बार्सिलोना, मलागा, वालेंसिया, मर्सिया, सेविले और बिलबाओ जैसे शहरों में लोग सुबह से ही सिग्नल, इंटरनेट और कॉल की समस्या से जूझ रहे हैं। हालांकि बेलिएरिक द्वीप इस परेशानी से अछूते हैं, वहीं कैनरी द्वीप समूह के कुछ हिस्सों में नेटवर्क संबंधित दिक्कतें देखी गई हैं। स्थिति को देखते हुए स्थानीय पुलिस, गार्डिया सिविल और अन्य एजेंसियों ने वैकल्पिक हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं ताकि लोग किसी दुर्घटना या आपात स्थिति में मदद मांग सकें। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ब्राजील की टेलीकॉम कंपनी ने कहा है कि वह हालात को सामान्य करने की दिशा में तेजी से काम कर रही है और तकनीकी टीमें प्रभावित क्षेत्रों में भेजी जा रही हैं। हालांकि, अभी तक यह नहीं बताया गया है कि सेवा कब तक बहाल होगी। यह समस्या नेटवर्क अपग्रेड के दौरान तकनीकी गड़बड़ी के कारण पैदा हुई है। सोशल मीडिया पर लोग टेलीकॉम कंपनियों पर गुस्सा निकाल रहे हैं और मुआवजे की मांग कर रहे हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व.श्री राजीव गांधी जी की 34 वीं पुण्यतिथि मनाई

मुरैना,कासं.। गांधी वाचनालय मुरैना में पुण्यतिथि पर राजीव जी की तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी! कार्यक्रम में तमाम कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे! इस अवसर पर शहर जिला अध्यक्ष दीपक शर्मा कार्यकारी जिला अध्यक्ष राजेंद्र यादव वरिष्ठ कांग्रेस की नेता एडवोकेट हरि शंकर शर्मा, सेवादल दल के जिला अध्यक्ष प्रदीप रजक दिनेश गोयल राजकुमार पाठक सुभाष महावर हरिराम पचौरिया ममता कुशवाहा राजेश राठौर विनोद यादव विपिन चौहान मिथुन तोमर राजीव यादव जी फैजान पठान पप्पू दीक्षित केके श्रीवास्तव शैलेंद्र सिंह आनंद रजक देशराज वर्मा रामवीर फौजी राहुल बंसल समीर खान भैरव बघेल बृजेश कुशवाहा राजू सिकरवार समस्त कांग्रेस पार्टी कार्यकर्ता एवं कांग्रेस सेवादल के अनेक प दा धिकारी मौजूद रहे ।

शोक व्यक्त करने पहुँचे विधायक बरैया के साथ जसवीर गुर्जर

मुरैना,कासं.। विगत दिनों मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री श्री सज्जन सिंह वर्मा के पुत्र गगन वर्मा का दुखद निधन हो गया था, स्व. श्री गगन वर्मा के निधन पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं विधायक फूल सिंह बरैया के साथ म.प्र. कांग्रेस कमेटी के सचिव जसवीर सिंह गुर्जर पूर्व मंत्री श्री वर्मा के इन्दौर निवास पर पहुँच कर शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि देकर दिवंगत आत्मा को ईश्वर अपने श्री चरणो में स्थान देने की प्रार्थना की।

अवैध शराब से भरी लोडिंग गाडी पकडी

मुरैना,कासं.। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर से अवैध शराब भर कर क्षेत्र में खपाने ले जा रहे शराब तस्करो को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर से सैयद नहर के पास लोडिंग गाडी क्रमांक एमपी07 जेडएक्स 9098 को रोककर उसकी तलाशी लेने पर उसमें 35 पेटी देशी मदिरा प्लेन एवं 5 पेटी देशी मदिरा मशाला तथा 20 कार्टून कोल्डड्रिंक के भरे हुए मिले जिसकी बाजारू कीमत एक लाख 83 हजार रूपये आंकी गई है। तथा वाहन की कीमत 6 लाख रूपये बताई गई है।

थाना पुलिस ने अवैध शराब सहित लोडिंग वाहन को जप्त कर आरोपी लाला उर्फ दिशांत पुत्र देवेन्द्र सिंह राजपूत निवासी इन्द्रा नगर हजीरा ग्वालियर के खिलाफ बीएनएस की धारा 34(2),47ए आवकारी एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

समर कैंप के समापन पर बच्चों को किया पुरस्कृत

झुण्डपुरा,कासं. । नगर के शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय झुण्डपुरा में चल रहा ग्रीष्मकालीन खेल शिविर मंगलवार को संपन्न हो गया। समापन समारोह में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। शिविर में बच्चों को प्रशिक्षकों ने नृत्य, गायन, योग, संगीत, खेलकूद, पारंपरिक खेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया। इन गतिविधियों से होने वाले शारीरिक और मानसिक लाभ की जानकारी भी दी गई। समारोह में मुख्य अतिथि चौकी प्रभारी ऋषिकेश शर्मा, विशिष्ट अतिथि पवन मिश्रा, कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य लोकेन्द्रसिंह ने की

ग्रीष्मकालीन शिविर के समापन पर बच्चों ने दिखाया हुनर दिखाया। बच्चों को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि ऋषिकेश शर्मा ने कहा कि हमें पढ़ाई-लिखाई के साथ साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान देना चाहिए जिससे हम स्वस्थ और शारीरिक रूप से बलवान बन सके क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है। शिविर में बच्चों को दी जा रही जानकारी से उनमें नैतिक, सांस्कृतिक शिक्षा के साथ नेतृत्व क्षमता, मिलकर किसी टास्क को पूरा करने की क्षमता विकसित हो रही है। बच्चों को राष्ट्र हित की भावना से कर्तव्य पालन करना आवश्यक है।ग्रीष्मकालीन खेल शिविर के समापन पर मौजूद बच्चे व खेल प्रशिक्षक धर्मेन्द्र मीणा और छात्र-छात्राओं के पालक मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य लोकेन्द्रसिंह ने की। मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर पूजा अर्चना कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसके बाद विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन और इंग्लिश स्पीकिंग की प्रस्तुति दी। पवन मिश्रा ने कहा कि हम अपनी वाणी से ही मित्र और शत्रु बनाते हैं इसलिए हमें ऐसी मित प्रिय वाणी बोलना चाहिए। आपके जीवन में कितना भी संकटभरा समय हो, कैसी भी विपत्ति हो हमें अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए। मेहनत से खूब मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए। प्राचार्य लोकेन्द्रसिंह ने कहा कि ये शिविर बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। इससे बच्चों की झिझक दूर होती है। समारोह के अंत में अतिथियों ने शिविर में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र और मेडल सील्ड प्रदान किए गए । कार्यक्रम में मंच संचालन अनिल शर्मा ने किया।इस अवसर पर प्राचार्य लोकेन्द्रसिंह जाटव, ऋषिकेश शर्मा,पवन मिश्रा, खेल प्रभारी धर्मेन्द्र मीणा, जीतेंद्र गुर्जर अनिल शर्मा धर्मेन्द्र राठौर अनुराग जगा विकास धाकड़ उदय प्रताप दुर्गेश प्रजापति अभय बुधौलिया सूर्यांश गोयल देववृत रावत उपस्थित रहे।

खेरला में भेड़िए ने अनेक बच्चों को काटकर घायल किया

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

सबलगढ़। सबलगढ़ के खेरला गांव में मंगलवार को खेल रहे बच्चों पर भेड़िया ने हमला कर दिया।उसने अनेक मासूम बच्चों को काटकर लहूलुहान कर दिया।भेड़िया को भगाने जैसे ही ग्रामीण आए तो भेड़िया ने उन पर भी हमला कर दिया जिससे वे भी घायल हो गए।गांव वालों ने बमुश्किल भेड़िया को भगाया और सभी घायलों को सिविलअस्पताल सबलगढ़ में भर्ती कराया गया।जहां सर्जन डॉ शरद शर्मा द्वारा उनका उपचार किया गया।

जल गंगा संवर्धन अभियान 2025

अम्बाह शाखा नहर की वितरिका पर साफ-सफाई की

मुरैना,कासं.। प्रदेश सरकार द्वारा ''जल गंगा संवर्धन अभियान 30 जून तक संचालित किया जा रहा है। अभियान के तहत जल संसाधन संभाग मुरैना के कार्यपालन यंत्री श्री पीएस जाटव के नेतृत्व में एबीसी उप संभाग क्रमांक 1 सबलगढ़ के अमीन श्री सोनवीर सिंह भदौरिया, श्री लिज्जो एवं श्री श्याम बाथम तथा विभागीय मैदानी कर्मचारियों ने मंगलवार को जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत अम्बाह शाखा नहर की वितरिका 4 एल की आरडी 10 मी. और 1000 मी. पर जंगल सफाई जनभागीदारी, जनसहयोग से किया गया। इस कार्य में गणमान्य नागरिकों ने भी सहयोग किया।

समाचार

संगीतमयी बौद्ध जीवन गाथा 23 से

मुरैना 21 मई। शहर के पंचशील गली प्रेम नगर वार्ड क्रमांक 47 में बौद्ध जयंती के अवसर पर तीन दिवसीय संगीतमयी बौद्ध गाथा का आयोजन 23 से 25 मई तक किया जा रहा है। यह आयोजन सुबह 11 से 5 बजे तक होगा, जिसका वाचन राष्ट्रीय बौद्धाचार्य सूरज राही फिरोजाबाद यूपी द्धारा किया जायेगा। आयोजक मंडल ने अपील की है कि तीन दिवसीय कार्यक्रम में संभव हो तो सफेद वस्त्र धारण करके।

गुप्ता बने युवा अग्रवाल महासभा के जिला उपाध्यक्ष

झुण्डपुरा। गत दिवस मुरैना में आयोजित अग्रवाल महासभा की जिला स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से अग्रवाल महासभा के संरक्षक रमेश गर्ग एवं जिला अध्यक्ष गोपाल गुप्ता के निर्देशन में युवा जिला अध्यक्ष पियुष गर्ग के द्वारा नगर के युवा व्यवसाई अंकुश गुप्ता को जिला उपाध्यक्ष मनोनीत किया है। उनके मनोनीत किए जाने पर सुनील गोयल मोहनलाल अनुभव गोयल शिवम गुप्ता बंटी गुप्ता विक्की गर्ग पंकज सिंघल मोनू गोयल दीपक गर्ग बंटी बंसल नीरज बंसल ने बधाई दी है

बिजली का तार गिरने से किसान की मौत

मुरैना 21 मई। अम्बाह थाना क्षेत्र के ग्राम सुनावली के हार में बिजली का तार गिरने से एक किसान की मौत हो गई। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सुनावली निवासी रामलखन उर्फ सिह परमार उम्र 28 साल अपने खेत पर जा रहा था कि उसी समय बिजली का तार टूट कर किसान के उपर गिर गया जिससे किसान करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। थाना पुलिस ने घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुँच कर शव का मौका पंचनामा बनाकर उसका पीएम कराकर उसे उसके परिजनो को सौपकर फरियादी सुनील पुत्र परमाल सिंह तोमर की रिपोर्ट पर से मर्ग कायम कर विवेचना में लिया गया है।

कछौआ में अंबेडकर मूर्ति क्षतिग्रस्त की, केस दर्ज

शिवपुरी। विधानसभा क्षेत्र के कछौआ में मंगलवार की सुबह ग्रामीणों ने भीम राव अंबेडकर की मूर्ति की दाहिने हाथ की एक उंगली टूटी देखी। मौके पर भीम आर्मी, आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ता और कई समाजजन वहां इकट्ठा हो गए। सभी ने दोषियों के खिलाफ कार्रवाई और नई मूर्ति लगाने की मांग की। कछौआ निवासी देवेंद्र जाटव ने पुलिस को बताया कि सोमवार रात गांव के ही एक युवक ने मूर्ति तोडने की धमकी दी थी और अगले दिन सुबह मूर्ति टूटी हुई मिली। पुलिस ने देवेंद्र जाटव की शिकायत पर केशव लोधी के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच शुरु कर दी है। बता दे कि पिछोर विधानसभा क्षेत्र में करीब एक दर्जन से ज्यादा बार महापुरुषों की मूर्तियां अवैध रूप से लगाई गई हैं जिनमें से कई को बाद में खंडित भी किया गया। इससे क्षेत्र में सांप्रदायिक तनाव भी बढ़ा जाता है।

त्रियोदशी का कार्ड बांटने जा रहा बाइक चालक दुर्घटना में घायल

-नींद का झोंका आने से अनियंत्रित हुई थी बाइक

शिवपुरी। कोलारस क्षेत्र के पारागढ़ में रहने वाले एक युवक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया जिसे इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। घायल युवक के साथ उसके दो साथी भी दुर्घटना के समय बाइक पर बैठे हुए थे। जिन्हें हल्की फुल्की चोटें आने से परिजन उन्हें सीधे घर ले गए। बताया जाता है कि घायल युवक अपने परिवार में हुई गमी के बाद त्रियोदशी के कार्ड बांटने घर से निकला था। जहां रास्ते में अचानक उसे नींद का झोंका आ गया जिससे बाइक अनियंत्रित होकर फिसल गई।

धारा आदिवासी अपने दो साथियों के साथ पारागढ़ गांव से बाइक पर सवार होकर शिवपुरी जाने के लिए निकला था। जहां रास्ते में उसे नींद का झोंका आ गया जिससे वह बाइक से अपना नियंत्रण खो बैठा और बाइक सड़क से उतर कर कच्चे रास्ते पर आ गई। जिससे बाइक फिसल गई इस दुर्घटना में धारा आदिवासी को गंभीर चोटें आ गई। जबकि बाइक पर पीछे बैठे उसके दोनों साथी सुरक्षित बच गए। जिन्हें मामूली खरोंचें आई थी। घटना के बाद घायल की भाभी सुनीता आदिवासी उसे लेकर अस्पताल पहुंची जहां उसका इलाज जारी हैं।

बैंकों के बाहर खड़े वाहनों से दिनभर जाम

शिवपुरी। कस्बे की एसबीआई और ग्रामीण बैंक शाखाओं के पास पार्किंग की सुविधा नहीं है। हर दिन हजारों खाताधारक बैंक पहुंचते हैं। उनके वाहन सड़क पर ही खड़े किए जाते हैं। सुबह 10 बजे बैंक खुलते ही ग्राहकों की भीड़ लग जाती है। लोग मकानों और दुकानों के सामने वाहन खड़े कर देते हैं। इससे कई बार विवाद की स्थिति बनती है।

सिविल डिफेंस और आपदा प्रबंधन वॉलेंटियर्स को एसडीआरएफ की टीम द्वारा ट्रेनिंग दी गई

मुरैना,कासं.। एसडीआरएफ की टीम द्वारा 200 से अधिक वॉलिंटियर्स को,देश में चल रही विपरीत परिस्थितियों को देखते हुए आम नागरिकों के बचाव के हेतु सिविल डिफेंस एवं आपदा प्रबंधन की ट्रेनिंग विगत दिवस सबलगढ़ में दी गई।

जिसमें आपदा आने पर बचाव के उपाय, इलाज के उपाय और एक दूसरे के सहयोग से आम नागरिकों के हित में काम करने की ट्रेनिंग प्रदान दी गई। डॉक्टर शरद शर्मा ने भी बचाव के उपाय के बारे में विशेष जानकारी दी। जिसमें गंभीर रूप से घायल,घायल एवं मृतक इन अवस्थयों को जानकर माली व्यक्तियों को वर्गीकरण करके अस्पताल तक कैसे ले जाना है और उनको किस प्रकार तुरंत इलाज प्रदान करने की व्यवस्था करनी है, इसकी भी ट्रेनिंग दी गई। इस अवसर पर नगर पालिका, जन अभियान परिषद के सदस्यों, एनसीसी, राष्ट्रीय सेवा योजना सहित ग्राम पंचायत के वॉलिंटियर्स उपस्थित थे।

अग्रवाल महासभा के प्रदेशाध्यक्ष कैलाश मित्तल का श्योपुर में हुआ जोरदार स्वागत

(गोबिंद गर्ग,चम्बलसुर्खी श्योपुर)

श्योपुर। मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा के नवनिर्वाचित प्रदेशअध्यक्ष श्री कैलाश मित्तल के प्रथम बार श्योपुर नगरागमन पर अग्रवाल समाज श्योपुर द्वारा बड़ौदा रोड स्थित श्री लक्ष्मी नारायण मथुरा लाल धर्मशाला में जोरदार स्वागत किया गया।इस अवसर पर उनके साथ श्री शंकर लाल सिंघल प्रदेश सचिव कैलारस श्री श्रीनिवास मंगल वीरपुर श्री सुनील अग्रवाल वीरपुर पधारे। इस अवसर पर अग्रवाल महासभा के संभागीय अध्यक्ष श्री उद्धव गर्ग द्वारा समाज के सदस्यों के साथ श्री मित्तल जी का सम्मान समारोह किया गया।जिसमें प्रदेश उपाध्यक्ष नरेश जिंदल भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अग्रवाल समाज के महिला पुरुष उपस्थित रहे। इस अवसर पर सभी के द्वारा आगंतुकअतिथियों का फूलमाला एवं शाल और स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रदेश अध्यक्ष द्वारा उपस्थित सभी अग्रवाल बंधु एवं माता बहनों का महाराजा अग्रसेन जी का प्रतीक दुपट्टा एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष दौलत राम गुप्ता पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गर्ग वरिष्ठ समाजसेवी श्री सत्यनारायण मित्तल पुरुषोत्तम शराफ नित्यानंद मंगल पवन गोयल पवन बंसल शिवम गर्ग आकाश गोयल जितेंद्र अग्रवालवरिष्ठ पत्रकार बृजेश गर्ग गोविंद गर्ग दिनेश सिंघल श्याम पटेल कमल अग्रवाल गोटू अग्रवाल समाज के अध्यक्ष मनोज गुप्ता महामंत्री अग्रवाल कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण सिंगला दीपक सिंघल मुकेश गोयल दीपक गर्ग श्रीमती कृष्णा गुप्ता श्रीमती उर्मिला बृजेश गर्ग श्रीमती हेमलता गोयल श्रीमती निशा गोयल श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल श्रीमती रेखा गर्ग एवं बड़ी संख्या में समाज के बंधुउपस्थित रहे।

मेन्टीनेंश कार्य के कारण 24 मई को इन क्षेत्रों की विद्युत सप्लाई बंद रहेगी

मुरैना,कासं.। मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी दत्तपुरा जोन के प्रबंधक ने बताया कि 33 केव्ही भौण्डेरी फीडर, 11 केव्ही न्यू फाटक फीडर, 11 केव्ही काशी पुरा फीडर, 11 केव्ही माता मंदिर, 11 केव्ही तुस्सीपुरा और 11 केव्ही पॉलीटेक्निक फीडर पर मेन्टीनेंश का कार्य किये जाने के लिये 24 मई को प्रातः 09 से अपरान्ह 03 बजे तक विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। जिसमें मनोहर नगर, तुस्सीपुरा, सुभाष नगर, गौशाला रोड़, चीनी हलवाई रोड़, स्टेशन रोड़, माहौर चैराह, नंदे पुरा, रामनगर, नई बस्ती, उत्तमपुरा, छोटी लालौर, वाल्मिक धर्मशाला, पीटीआर वाला क्षेत्र, बड़ोखर, शमसान घाट, नंदे पुरा रोड़, पॉलीटेक्निक, अम्बाह बायपास, पेट्रॉल पंप, आदर्श कॉलोनी से संबंधित क्षेत्रों की विद्युत सप्लाई बंद रहेगी।

मानसिक तनाव से बचने के लिये विशेषज्ञों की मदद लें

मुरैना,कासं.। मानसिक तनाव शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है। तनाव के कारण शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है जैसे रक्त चाप, हृदय गति, श्वसन, मासंपेसियों में रक्त के प्रवाह को बढ़ाता है। इससे स्ट्रोक, दिल का दौरा होने के साथ अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पदमेश उपाध्याय के मार्गदर्शन में सिविल सर्जन डॉ. गजेन्द्र सिंह तोमर ने बताया है कि चिकित्सक मानसिक शारीरिक और व्यवहार संबंधी संकेतों के आधार पर तनाव को समझते है।इन संकेतों में ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थता,भूलने की बीमारी, चिंता, चिड़चिड़ापन, प्रेरणा की कमी,कब्ज, दस्त, अनिन्द्रा समाज से कटे-कटे रहना आदि शामिल है।उन्होंने बताया कि व्यक्ति अपने अंदर हो रहे इस बदलाव को महसूस कर सकता है।तनाव से निजात पाने के लिए, तनाव की तीव्रता को समझकर उसे कम करने की कोशिश करें,व्यवहार में बदलाव लायें,दूसरों की मदद लेने या इसके बारे में बात करने में संकोच न करें,नकारात्मक न सोंचे,मैडिटेशन करे,एक ही समय में सब कुछ करने की कोशिश से बचे दिमाग को एवं खुद को आराम दें,अपने मित्रों और परिवार के साथ समय बितायें, जिससे अपनेपन की भावना जागृत हो इसके साथ ही शारीरिक व्यायाम करें, पर्याप्त नींद लें(गहरी नींद आपके मस्तिष्क को शांत रहने में मदद करती हैं)संगीत सुने,आत्म ध्यान का अभ्यास करें, अपने लिए कुछ समय निकालें, हर दिन आधा घंटा बाहरी प्रभावों के बिना अपने विचारों और भावनाओं को समझें उन्हें लिख भी सकते है।

आरएमओ डॉ. डी.एस यादव ने आमजन से अपील की है कि मानसिक तनाव से बचने के लिये विशेषज्ञों की मदद लें। जिससे परामर्श व चिकित्सा द्वारा आपकी मदद कर मानसिक बीमारी होने से बचाव किया जा सके।

ग्राम खिटौरा में जंगल सफाई का कार्य किया

मुरैना,कासं.। ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' के तहत जल संसाधन विभाग द्वारा ग्राम खिटौरा में जंगल सफाई का कार्य किया गया। इसके साथ ही अम्बाह शाखा नहर की वितरिका 1 एल/32आर/एबीसी ग्राम ऐसाह में नहर के अंतिम छोर की आरडी 4.455 किलो. एवं 32 आर/एबीसी ग्राम ऐसाह में नहर के अंतिम छोर की आरडी 4.58 किलो. पर स्टोन लगाया गया। इसी प्रकार अम्बाह शाखा नहर की वितरिका 1 एल/33 आर/एबीसी ग्राम बरेह में नहर के अंतिम छोर की आरडी 1.760 किलो. एवं 1 एल/1 एल/33 आर/एबीसी ग्राम बरेह में नहर की अंतिम छोर की आरडी 0.760 किलो. पर स्टोन लगाया गया।

पानी दो, प्यास बुझाओ
पानी दो, प्यास बुझाओ,
पशु-पक्षियों का दर्द मिटाओ।

1. गर्मी का मौसम,
सूखा है जमाना,
पशु-पक्षी प्यासे,
ढूंढ रहे ठिकाना।
एक घड़ा पानी का,
दे दो उन्हें प्यार से,
पुनीत यह कार्य है,
करो इसे बार-बार से।
पानी दो, प्यास बुझाओ,
पशु-पक्षियों का दर्द मिटाओ।
छोटा सा काम, बड़ा पुण्य मिलेगा
करके देखो, सुख अनन्य मिलेगा।

2. देखो उनकी आँखों में,
खुशी का है पहरा,
एक छोटा सा काम,
पर असर है गहरा।
संतुलन प्रकृति का,
हमेशा बना रहेगा,
मानवता की मिसाल,
लिए जमाना खड़ा रहेगा।
पानी दो, प्यास बुझाओ,
पशु-पक्षियों का दर्द मिटाओ।
छोटा सा काम,
बड़ा पुण्य मिलेगा,
करके देखो,
सुख अनन्य मिलेगा

3. हम सब एक हैं,
इस धरती के वासी,
पशु-पक्षी भी हैं जहां में ,
इस प्रकृति के साथी।
करना देखभाल उनकी,
हमारा कर्तव्य है हमारा,
ईश्वर भी वंदन करते उनका,
जो दे मानवता को सहारा।
पानी दो, प्यास बुझाओ,
पशु-पक्षियों का दर्द मिटाओ।
छोटा सा काम,
बड़ा पुण्य मिलेगा,
करके देखो,
सुख अनन्य मिलेगा।

डॉ शरद शर्मा
सबलगढ़

मुख्यमंत्री का गेहूँ के रिकार्ड उपार्जन पर खाद्य मंत्री ने किया अभिनंदन

भोपाल,ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किसानों के हित में न्यूनतम समर्थन मूल्य के अतिरिक्त 175 रुपये प्रति क्विंटल बोनस की घोषणा के परिणामस्वरूप रबी विपणन वर्ष 2025-26 में लगभग 9 लाख किसानों से 77 लाख 75 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया गया है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया कि गत वर्ष 48 लाख 38 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन हुआ था। इंदौर में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में उन्होंने किसानों के हित में मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा दिये गये बोनस एवं उसके बाद हुए रिकार्ड गेहूँ उपार्जन पर उनका अभिनंदन कर लोकहित में कार्य करने के लिए लोकमाता की प्रतिमा भेंट की। मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि गेहूँ के उपार्जन में मध्यप्रदेश देश में दूसरे स्थान पर है।

मुख्यमंत्री द्वारा प्रोत्साहन राशि की घोषणा का परिणाम - 77.75 लाख मीट्रिक टन गेहूँ उपार्जित - खाद्य मंत्री श्री

एक लाख से अधिक महिला किसानों से 8.98 लाख मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रूपये है और राज्य सरकार द्वारा 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस दिया गया है। इस तरह से गेहूँ का उपार्जन 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से किया गया है, जो कि देश में सर्वाधिक है। उन्होंने बताया कि 9 लाख किसानों में से 1 लाख 23 हजार महिला किसानों द्वारा 8 लाख 98 हजार मीट्रिक टन गेहूँ का विक्रय किया गया है। समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए 3623 केन्द्र खोले गए जिसमें से 293 केन्द्र महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा संचालित किए गए, इससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला। महिला किसानों के खाते में 2 हजार 335 करोड़ रूपये का बोनस सहित भुगतान किया जा चुका है। किसानों के खातों में कुल 19 हजार 322 करोड़ रूपये का भुगतान किया गया है।

किसानों की सुविधा के लिए की गई व्यवस्था

समर्थन मूल्य का लाभ बिचौलियों/व्यापारियों द्वारा समर्थन मूल्य का लाभ प्राप्त करने से रोकने हेतु इस वर्ष बायोमेट्रिक / ओटीपी आधारित किसान पंजीयन की व्यवस्था की गई। किसानों द्वारा विक्रय उपज के समर्थन मूल्य की राशि उनके बैंक खाते में निर्बाध रूप से भुगतान किया जा सके, इसलिए कृषक के आधार लिंक बैंक खाते में भुगतान की व्यवस्था की गई है। कृषक द्वारा स्वयं उपार्जन केन्द्र का चयन कर उपज विक्रय के लिये स्लॉट बुकिंग की व्यवस्था की गई। उपार्जन करने वाली समितियों को दैनिक व्यय की पूर्ति हेतु मंडी लेबर व्यय का भुगतान प्रतिदिन किसानों के भुगतान के साथ करने की व्यवस्था की गई है। शनिवार एवं अन्य अवकाश के दिनों में किसान द्वारा अपनी उपज विक्रय के लिए उपार्जन केन्द्र पर लाने पर खरीदी की गई। इस वर्ष पंजीयन 20 जनवरी 2025 से शुरू कर दिया गया जो 9 अप्रैल तक चलता रहा। इस वर्ष, पिछले वर्ष की तुलना में पंजीयन के लिए ज्यादा समय दिया गया था।

पुलिस ने मुठभेड़ में गिरफ्तार किए तीन अभियुक्त: टप्पेबाजी की घटना में थे वांछित, दो हुए फरार जिन्हें पुलिस ने पकड़ा

आगरा,कासं. । थाना न्यू आगरा पुलिस की टप्पेबाजी की घटना को अंजाम देने वाले अभियुक्तों के साथ मुठभेड़ हुई। जिसमें तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया है। तीनों के पैर में गोली लगी है। दो अभियुक्त फरार हो गए, जिन्हें बाद में गिरफ्ता किया गया। डीसीपी सिटी सोनम कुमार ने बताया कि थाना न्यू आगरा पुलिस टीम को मुखबिर से सूचना मिली कि टप्पेबाजी की घटना को अंजाम देने वाले अभियुक्त दयालबाग में पोइया घाट की तरफ जा रहे हैं। पुलिस टीम ने अभियुक्तों को रोकने की कोशिश की गई, जिसमें अभियुक्तों ने पुलिस टीम पर फायरिंग की। जवाबी फायरिंग में पुलिस ने तीन अभियुक्तों के पैरों में गोली मारी। दो अभियुक्त अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गए। लेकिन पुलिस ने दोनों की तलाश में काम्बिंग की। बाद में उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया।

पकड़े गए अभियुक्तों के नाम

महेंद्र पुत्र हतीनाथ निवासी जोगीबाड़ा शाहगंज हाल निवासी मयूर विहार दिलली। मनोज गोस्वामी पुत्र नेमीचंद्रन पुत्र निवासी चक्की वाली गली थाना शाहगंज । हकीम गोस्वामी पुत्र रामजीलाल निवासी भगत सिंह कालोनी फरीदाबाद।

घायल तीनों अभियुक्तों को गिरफ्तार कर इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। तीनों अभियुक्त पर टप्पेबाजी की घटना में थाना न्यू आगरा पर पंजीकृत अभियोग में वांछित है।

प्रधानमंत्री के भोपाल आगमन के लिए जारी तैयारियों का मुख्यमंत्री ने किया निरीक्षण

31 मई को जम्बूरी मैदान में होगा महिला सम्मेलन

भोपाल,ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि महिलाओं की प्रगति के बिना देश-प्रदेश की प्रगति अधूरी है। इसी उद्देश्य से उन्होंने ज्ञान के सूत्र के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण को विशेष महत्व दिया है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री श्री मोदी महिला सम्मेलन में सहभागिता के लिए 31 मई को भोपाल पधार रहे हैं। लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर के त्रिशताब्दी जयंती समारोह के उपलक्ष्य में महिला सशक्तिकरण और महिला स्वावलम्बन पर केन्द्रित इस सम्मेलन में दो लाख से अधिक महिलाएं भाग लेंगी। भोपाल में होने वाला यह आयोजन, नया रिकार्ड बनाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जम्बूरी मैदान पर जारी तैयारियों, प्रस्तावित यातायात और बैठक व्यवस्था आदि की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में बड़ी संख्या में बहनें भाग ले रही हैं, उनकी बैठक व्यवस्था, खान-पान और पेयजल की उपलब्धता तथा आयोजन स्थल पर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस अवसर पर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए संचालित गतिविधियों और महिला स्वावलम्बन की दिशा में स्व-सहायता समूहों व कौशल उन्नयन के लिए संचालित गतिविधियों पर केन्द्रित प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। लोकमाता देवी अहिल्या, सुशासन का प्रतीक रही हैं। अंत्य जनकल्याण और प्रदेशवासियों का जीवन सुगम बनाने के लिए प्रदेश में संचालित कार्यक्रमों को भी यहां प्रदर्शित किया जाएगा।

देवी अहिल्याबाई की जयंती: भाजपा ने निकाली विशाल बाइक रैली

देवी अहिल्याबाई महानता की प्रतिमूर्ति थीं, वह एक वीर योद्धा थीं-श्री जयप्रकाश राजौरिया

ग्वालियर। रानी अहिल्याबाई होल्कर जी की जयंती भारतीय जनता पार्टी ग्वालियर महानगर 21 से 31 मई तक विशेष रूप से मना रही हैं। इसी क्रम में बुधवार को भारतीय जनता पार्टी ग्वालियर महानगर द्वारा एक विशाल बाइक रैली निकाली गई। इस रैली का नेतृत्व भाजपा महिला मोर्चा ने किया। इस बाइक रैली को झंडी दिखाकर भाजपा जिलाध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया ने रवाना किया। यह बाइक रैली महारानी लक्ष्मीबाई की समाधि से प्रारंभ होकर फूलबाग चौराहा, नदी गेट, शिंदे की छावनी, डीडी मॉल होते हुए समाधि स्थल पर समाप्त हुई।

महाराजा अग्रसेन समाज सुधारक थे: कौशिक महाराज

- सम्मेलन में 245 परिवारों ने अपने बच्चों के रिश्तें तलाशें

ग्वालियर,नसं.। अग्रवाल परिचय सम्मेलन के दूसरे दिन मानस भवन में भारी संख्या में अग्रबंधु एकत्रित हुए। कार्यक्रम में कौशिक महाराज ने पधारकर युवक युवतियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि महाराजा अग्रसेन समाज सुधारक थे। कार्यक्रम में पूर्व सांसद विवेक शेजवलकर, पूर्व विधायक मुन्नालाल गोयल, पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने परिचय सम्मेलन के 125 सफल आयोजन के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश ऐरन और उनके सभी साथियों को दी।

अंतिम समय में भगवान का नाम लेने से जीव का होता है कल्याण: पूज्य सिया बल्लभ दास वेदांती जी महाराज

चतुर्थ दिवस की भागवत कथा में कृष्ण जन्मोत्सव पर झूमे श्रद्धालु

जबलपुर ,ब्यूरो।

मनुष्य इस सांसारिक मोह में फस कर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा देता है। मनुष्य अपने मन के कुविचारों को निकाल कर परमेश्वर का ध्यान लगाता है तो वह मोक्ष की प्राप्ति करता है कथा के दौरान फूलों की होली खेली गई और भगवान श्री कृष्ण के जयकारों के साथ भगवान श्री कृष्ण का जन्म उत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया मनुष्य अपने मन, वाणी और शरीर से पाप करता है यदि वह इन्हीं पापों का इसी जन्म में प्रायश्चित्त न कर ले, तो मरने के बाद भयंकर नरकों की यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। इसलिए, जैसे कोई कुशल वैद्य बीमारी का कारण जानकर तुरंत इलाज करता है, वैसे ही मनुष्य को भी शीघ्रता से अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए भगवन् मनुष्य जानता है कि पाप बुरा है, फिर भी वह बार-बार वही गलतियाँ दोहराता है। राजदण्ड, समाज का भय और नरक की यातनाएँ जानते हुए भी वह पाप करने से बच नहीं पाता ऐसे में उसके पापों का प्रायश्चित्त कैसे संभव है कभी वह प्रायश्चित्त करके पापों से बच जाता है, लेकिन बाद में फिर वही करने लगता है। यह तो वैसा ही हुआ जैसे हाथी स्नान करने के बाद फिर धूल में लोट जाए अगर ऐसा ही चलता रहे, तो क्या प्रायश्चित्त करना व्यर्थ नहीं है सिर्फ कर्म करने से पाप खत्म नहीं होते, क्योंकि जब तक अज्ञान बना रहेगा, पाप की आदत छूटेगी नहीं इसलिए सच्चा प्रायश्चित्त तत्त्वज्ञान ही है जैसे कोई सही खान-पान अपनाए तो बीमारियाँ पास नहीं आतीं, वैसे ही जो अच्छे नियमों का पालन करता है, वह धीरे-धीरे बुरी आदतों से मुक्त होकर तत्त्वज्ञान प्राप्त कर सकता है। जैसे आग पूरे जंगल को भस्म कर देती है, वैसे ही तपस्या, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय संयम, मन की स्थिरता, दान, सत्य, शुद्धता और अच्छे नियमों का पालन इनसे मन, वाणी और शरीर से किए गए बड़े से बड़े पाप भी नष्ट हो सकते हैं भागवत कथा में महामंडलेश्वर आचार्य श्री सिया बल्लभ दास वेदांती जी महाराज ने अजामिल में बारे में बताया महापापी था वैश्या गमन करता था लेकिन पुत्र का नाम नारायण रखने से वह भी बैकुंठ धाम का अधिकारी हुआ अंत समय में जिसके भी मुख से भगवान नारायण का नाम निकलता है परम पद का अधिकारी होता है वहीं हिरणाकश्यप वध प्रहलाद द्वारा नरसिंह भगवान की स्तुति आदि का कथा में वर्णन किया गया भागवत कथा में भगवान बाल कृष्ण की झांकी ने सभी का मन मोह लिया यह कथा नर्मदा तट अग्रवाल धर्मशाला ग्वारीघाट घाट दरोगा घाट पर श्रीमती प्रकाश देवी पत्नी स्व दीवान सिंह सिकरवार ग्राम गढ़ी तोर तिलावली माता जी व उनके पुत्र रघुराज सिंह सिकरवार, रघुनाथ सिंह सिकरवार हरिनारायण सिंह सिकरवार, रवीन्द्र सिंह सिकरवार (राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक सच टाइम्स, दैनिक श्योपुर एक्सप्रेस समूह द्वारा) व नाती राजीव सिंह सिकरवार (प्रधान संपादक राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक मध्य राज्य, दैनिक उदयदेश समूह द्वारा आयोजित की गई है पूज्य महाराज श्री द्वारा नवधा भक्ति की महिमा बताई गई जिसके जीवन में एक भी भक्ति आ जाऐ रघुनाथ जी महाराज के इस शरीर में ही दर्शन हो जाऐंगे

साथी अभियान का क्रियान्वयन 15 अगस्त तक

विदिशा निराश्रित बच्चों के लिए साथी अभियान जिले में संचालित किया जा रहा है जो 15 अगस्त तक क्रियान्वित किया जाएगा। नालसा व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के दिशा निर्देशो में और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री जाकिर हुसैन के मार्गदर्शन में क्रियान्वित साथी अभियान के संबंध में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री एनएस तोमर ने बताया कि लावारिस बच्चों को चिन्हित कर उनके आधार कार्ड बनाए जाएंगे और उन्हें शासन की योजना का लाभ दिलाकर मुख्य धारा से जोड़ा जाएगा। साथी अभियान के तहत संपादित किए जाने वाले कार्यो के लिए न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई है। उक्त कमेटी में तहसीलदार, डीपीओ, सीएमएचओ, महिला एवं बाल विकास अधिकारी और अधिवक्ता कमेटी के सदस्य नियुक्त किए गए है। साथी अभियान के लिए गठित समिति के अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव की अध्यक्षता में आज बैठक आयोजित कर अभियान के क्रियान्वयन व आयोजन की रूपरेखा तय की गई है।

शसक्त पीली सेना में नई नियुक्तियाँ, पदाधिकारियों को सौंपी गई अहम जिम्मेदारियाँ

समाज में बदलाव की दिशा में संगठन का संकल्प - शबाना खंडेलवाल

आगरा,कासं. । शसक्त पीली सेना की एक अहम बैठक संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष शबाना खंडेलवाल के आगरा स्थित निवास पर आयोजित की गई। इस बैठक में संगठन के राष्ट्रीय, प्रादेशिक और जिला स्तरीय पदाधिकारियों की नियुक्तियाँ की गईं और उन्हें जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं। बैठक के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर गुड्डू कुरैशी और अनस राजपूत को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। अज़हर उमरी को राष्ट्रीय संगठन प्रभारी और अबरार क़ुरैशी को राष्ट्रीय महासचिव मुहम्मद आदिल को राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी गई।

प्रादेशिक स्तर पर भी कई महत्वपूर्ण नियुक्तियाँ की गईं। निधि खंडेलवाल कटियार को दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष, जेड यू खान को उत्तराखंड प्रदेश अध्यक्ष, अल्ताफ को जम्मू-कश्मीर प्रदेश अध्यक्ष, और राधा अग्रवाल बारा द्वार छत्तीसगढ़ का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय महासचिव शानू खान को महाराष्ट्र प्रभारी, आशिक अब्बास को उत्तर प्रदेश महासचिव, नेहा विर्क को प्रदेश उपाध्यक्ष रुद्रपुर उत्तराखंड शीतल खंडेलवाल को मध्यप्रदेश भोपाल प्रदेश अध्यक्ष और मुस्कान शेख किछंदवाड़ा मध्यप्रदेश प्रदेश महासचिव की जिम्मेदारी दी गई। जावेद हुसैन को आगरा जिला अध्यक्ष बनाया गया।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष शबाना खंडेलवाल ने कहा कि शसक्त पीली सेना का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को जड़ से समाप्त करना है। उन्होंने कहा कि संगठन के प्रत्येक पदाधिकारी का यह कर्तव्य है कि यदि किसी के साथ अन्याय हो रहा हो तो वे उसके हित के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करें।

उन्होंने यह भी कहा कि संगठन समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध है और हर कार्यकर्ता को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। बैठक में शामिल लोगों में शबाना अंसारी रेहाना बेग़म अंजलि कुलकर्णी नीरज जैन मोहम्मद शीनू ख़ान रेशमा वैष्णवी शिवालिक रीना अग्रवाल मधु शर्मा इसने लता आदि मौजूद थे।

अभियान की उपलब्धियां उत्कृष्ट टीम वर्क और प्लानिंग का नतीजा : राज्यपाल

संयमित जीवन शैली पालन भारतीय संस्कृति की परिपाटी -: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल,ब्यूरो।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने सौ दिवसीय निक्षय शिविर अभियान के संचालन में, टी.बी. उन्मूलन प्रयासों को विस्तारित करने, समाज के विभिन्न वर्गों के सहयोग से फूड बास्केट वितरण करने और 5 हजार से अधिक टी.बी. मुक्त ग्राम पंचायतों की उपलब्धियों के लिए राज्य सरकार के प्रयासों की सराहना की है। उन्होंने कहा कि राज्य की उपलब्धियां उत्कृष्ट टीमवर्क और प्लानिंग का नतीजा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में उत्तम सुख निरोगी काया का भाव प्राचीन काल से ही विद्यमान रहा है। परिवारों में ऋतु आधारित आहार-विहार और संयमित जीवन शैली के विचार के व्यवहार में पालन की परिपाटी रही है। राज्यपाल श्री पटेल तथा मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 100 दिवसीय नि:क्षय शिविर अभियान सम्मान समारोह और स्वस्थ यकृत मिशन का शुभारंभ राजभवन स्थित सांदीपनि सभागार में किया।

जिला समन्वयक समिति की बैठक सम्पन्न

05 कोल्ड स्टोर एवं 11 सोलर पैनल स्थापना के प्रस्ताव अनुमोदित

अलीगढ़,ब्यूरो।

जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कलैक्ट्रेट सभागार में एकीकृत बागवानी विकास मिशन (राष्ट्रीय बागवानी मिशन) के अंतर्गत जिला समन्वयक समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्री एवं पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट के अंतर्गत प्राप्त 05 कोल्ड स्टोर एवं 11 सोलर पैनल स्थापना के प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए उन्हें अनुमोदित किया गया।

बैठक का उद्देश्य जिले में बागवानी क्षेत्र के समुचित विकास के लिए प्रस्तावित योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करना और किसानों को उपज के उपरांत प्रबंधन की सुविधाएं उपलब्ध कराना रहा। जिला उद्यान अधिकारी शिवानी तौमर ने बताया कि सभी 16 प्रस्ताव यथा- 11 सोलर पैनल स्थापना एवं 05 कोल्ड स्टोर जिला स्तरीय समिति से अनुमोदन के उपरांत राज्य स्तरीय समिति को भेजे जाएंगे।

बैठक में परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण भाल चन्द त्रिपाठी, जिला विकास अधिकारी आलोक आर्या, उप निदेशक उद्यान बलजीत सिंह, जिला उद्यान अधिकारी शिवानी तोमर, सहायक विपणन अधिकारी भगवती प्रसाद, प्रशासनिक अधिकारी जिला पंचायत धर्मपाल सिंह, उप कृषि निदेशक यशराज सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र से डा0 नेत्रपाल मलिक, एफपीओ प्रतिनिधियों में अजय पाल सिंह भू-समृद्धि एफपीओ, संतोष कुमार सिंह बृज किसान प्रोड्यूसर कम्पनी लि0 एफपीओ और राकेश कुमार ग्राम नवलपुर, इगलास ने भी बैठक में भाग लेते हुए महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए।

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक रामविलास शर्मा द्वारा चम्बल प्रिंटिंग प्रेस इण्डस्ट्रीज एरिया बानमोर से मुद्रित व एस 12 द्वितीय तल रायल प्लाजा पुराने हाईकोर्ट के सामने ग्वालियर से प्रकाशित । प्रधान संपादक रामविलास शर्मा मोबा.- 9329077393
email-chambalsurkhi@yahoo.com आर.एन.आई. पंजीयन नं MPHIN/2007/20705 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना रहेगा। कानूनी सलाहकार युवराज कुलश्रेष्ठ एडवोकेट मो.9229842150 फोन- (07532)- 225779,9827679954